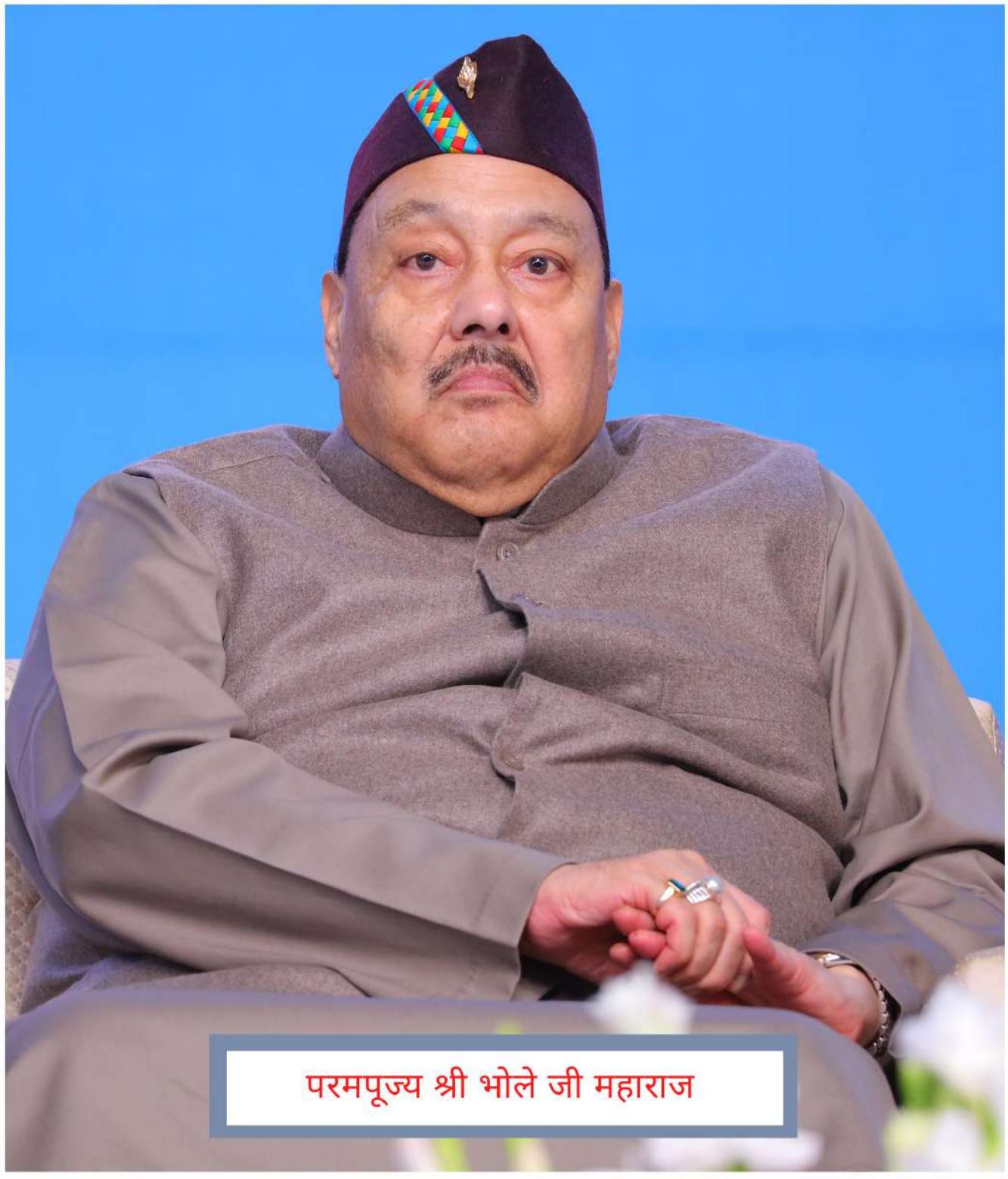


वर्ष: 16 | अंक : 12 | दिसम्बर, 2025 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश



परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका



हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-12

दिसम्बर, 2025

मार्गशीर्ष-पौष, 2082 वि.स.

प्रकाशन की तारीख

प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,

B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,

छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DELHIN/2010/32010

संपादकीय

सच्ची साधना

सा

मान्यतः लोग मानते हैं कि साधना केवल हिमालय की गुफाओं में ही की जा सकती है; लेकिन सच्ची साधना किसी स्थान विशेष पर निर्भर नहीं, वह तो साधक की लगन, संकल्प और मन की अवस्था है। जिस क्षण मन संयमित हो जाता है, वहीं से साधना आरंभ हो जाती है। शास्त्रों के अनुसार साधना के दो मार्ग हैं- श्रेय और प्रेय। प्रेय वह है, जो अभी सुख देता है, लेकिन आगे चलकर दुःख या बंधन का कारण बनता है। जैसे इंद्रियों की इच्छाएं, आलस्य या क्षणिक सांसारिक सुख अपनी ओर खींचते हैं और साधक अनायास उनकी ओर आकर्षित और अधीन हो जाता है। श्रेय वह मार्ग है जो शुरू में कठिन लगता है, पर आत्मा को ऊँचा उठाता है। संयम, सत्य, कर्तव्य और आत्मनियंत्रण श्रेय के मार्ग हैं। श्रेय वह है जो दीर्घकाल में सही हो, जैसे शास्त्रविहित कर्तव्य कर्मों का निर्वहन करते हुए संयम, संतुष्टि और आत्मोन्नति को उपलब्ध होना, जो शाश्वत सुख और शांति प्रदान करे। जबकि प्रेय मार्ग वह है जो तुरंत सुख दे, जैसे कोई मनोरंजन, विश्राम या भोग। साधक साधना के समय विषय-वासनाओं में समय गंवाता है, तो वह तात्कालिक सुख तो प्राप्त कर लेता है, किन्तु वह अपना शाश्वत हित, सुख और शांति को खो देता है। श्रेय मार्ग ज्ञान और प्रकाश का मार्ग है तथा प्रेम मार्ग अज्ञान और अंधकार का मार्ग है।

कई साधकों के लिए हिमालय की वर्फली चोटियों के बीच साधना करना सरल हो सकता है, लेकिन वास्तविक साधना तो संसार के कर्तव्य कर्म निर्वहन के बीच रहकर भी मन को शांत और पवित्र रखना है। जो व्यक्ति लौकिक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए भी भीतर से एकाग्र और शांत है तथा अपनी इंद्रियों को नियंत्रण में रखता है अर्थात् आंख वही देखे जो पवित्र है, वाणी वही बोले जो हितकारी है और मन वही सोचे जो शुभ है। इस संतुलन से घर ही आश्रम बन जाता है और मनुष्य स्वयं साधु। सच्चा साधु वह नहीं जो वस्त्र बदल ले, बल्कि वह है जो भावना और विचारों को बदल ले। जो अपने भीतर की अपवित्रता और उथल-पुथल से लड़े, वही सच्चा साधु है। इसलिए साधना के लिए हिमालय जाने की आवश्यकता नहीं, बल्कि मन को आध्यात्मिक साधना में निरंतर निरत करना है, जहां विचार निर्मल हों और आत्मा शांत। वहीं से आरंभ होती है वह यात्रा, जो हमें परमात्मा के साक्षात्कार तक ले जाती है। आत्म साक्षात्कार के पश्चात ही साधक साधु रूप में परिणत होता है, यही वास्तव में सच्ची साधना है। इसलिए श्री सद्गुरु प्रदत्त अध्यात्म ज्ञान की साधना में निरंतर निरत हों, तभी हरएक परिस्थिति में शांति, स्थिरता और आनंद की सुखानुभूति संभव है। ■

आत्मज्ञान खोज की कहानी, श्री हंस जी महाराज की जुबानी

श्री हंस जी महाराज प्रेमी भक्तों को बताते थे कि आत्मज्ञान की खोज में मैं हरएक धर्म-सम्प्रदाय के लोगों से बातचीत करता था और जो स्वतः मुझे आन्तरिक अनुभव होते थे, उनके बारे में उनसे पूछता था। इस काल में मैंने भिन्न-भिन्न धर्म सिद्धान्तों का गहनता से अध्ययन भी किया, लेकिन किसी ने भी उन्हें आत्मज्ञान की प्रत्यक्ष अनुभूति का आश्वासन नहीं दिया। केवल किताबी ज्ञान या शास्त्रीय मत को ही सन्त-महात्मा एवं आचार्यगण उनके सामने रखते रहे, जिससे मुझे आत्म-संतुष्टि नहीं मिली। किन्तु मेरे अन्दर तो उस परमसत्ता के प्रत्यक्षीकरण की प्रबल जिज्ञासा थी। मेरा कहना था कि-

जब तक न देखूँ अपनी नैनी।
तब तक न मानूँ गुरु की बैनी॥

अधिकतर साधु-महात्माओं को मैंने केवल दिखावे का साधु ही पाया। संयोगवश लाहौर में मेरी भेंट स्वामी श्री स्वरूपानंद जी महाराज से हुई, जिनसे दीक्षा प्राप्त कर मेरे जीवन का संपूर्ण रूपान्तरण हो गया। श्री गुरु महाराज जी की छत्रछाया में अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों और तत्त्वज्ञान को मैं सहज में ही समझ गया। भक्तों का मानना था कि “श्री हंस जी महाराज सिद्ध पुरुष तो थे ही, केवल चिनगारी दिखाने की जरूरत थी और जैसे ही स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज मिले, तो उनके भीतर का ज्ञान प्रज्ज्वलित हो उठा। उनकी समस्त शंकाएं तिरेहित हो गईं; क्योंकि सत्य और असत्य का निर्णय हो गया था। श्री सद्गुरु महाराज की कृपा से उनके भीतर हंस के समान नीर और क्षीर को अलग करने की सामर्थ्य उत्पन्न हो गई थी।”

एक बार श्री हंस जी महाराज ने प्रसंगवश प्रेमीभक्तों को बताया था कि पहले मैं आर्यसमाजी विचारों का था। मुझे यह विश्वास था कि ‘ओम’ से ज्यादा कुछ नहीं है और गायत्री मंत्र पर मुझे विश्वास था। ज्ञान की खोज में मैं एक ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ सत्संग और भंडारा चल रहा था। मैंने वहाँ उन महापुरुष का सत्संग सुना। उनकी बातें

औरों से अलग और शास्त्र-सम्मत लगीं; सत्संग सुनने के पश्चात मैंने उनसे कहा कि बताओ, जो अभी सुना रहे थे? वे महापुरुष बोले कि फलां जगह आना, वहाँ हमारा आश्रम है। अगले दिन मैं उनके आश्रम पहुँचा। बारिश हो रही थी, मेरे सब कपड़े भीग गए थे, बारिश में भीगता हुआ गया था। वैसे भी उस आश्रम में एक कमरा था और आगे बरामदा था। बरामदे में पानी की बाल्टी और एक लोटा रखा हुआ था। वहाँ कुछ प्रेमी बैठे हुए थे। उन महापुरुष ने मुझे देखा तो हंस पड़े। उन्होंने कहा कि इसके पांव धोओ। मैंने कहा कि मैं क्यों अपने पांव धुलवाऊँ? आपने उस दिन कहा था कि बताऊँगा, तो वह ज्ञान जनाइए। उन्होंने कहा कि कल आना, कल बताऊँगा। तब मैंने एक बड़ा दृष्टान्त उनके समक्ष प्रस्तुत किया।

मैंने वह दृष्टान्त सुनाया और रावण की बात भी सुनाई कि रावण ने अंतिम समय में कहा था कि “अच्छे काम को कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।” मेरी बात सुनकर वे बहुत हंसे और बोले कि कल आना। मुझे बहुत गुस्सा आया; लेकिन मैंने अपना गुस्सा शांत किया कि देखो, कल की ही तो बात है; चलो देखते हैं, क्या बतायेंगे? अगर ऐसी-वैसी

बात बताएंगे, तो मैं शास्त्रार्थ करूँगा और अगर ठीक बात हुई, तो मेरा ही जन्म सार्थक हो जायेगा। इसलिए मैं शांत होकर बैठ गया। अगले दिन मैं कितनी मुश्किल से पहुँचा, यह एक लम्बी कहानी है। वर्षा हो रही थी, रास्ते में एक नदी पड़ती थी। जब मैं नदी को पार करने लगा, तो अचानक मेरा पांव फिसल गया और मैं नदी में डूबने लगा। ख्याल आया कि ओह! यह मेरा शरीर तो छूट ही जायेगा, अच्छा होता कि श्री गुरु महाराज जी से उपदेश ले लेता और मैं अब आत्मज्ञान जाने बिना ही इस संसार से जा रहा हूँ। ऐसा ख्याल आते ही अचानक मुझे किसी ने पकड़ कर नदी से बाहर निकाला और किनारे पर बिठा दिया। उसके बाद जब मैं इधर-उधर देखने लगा कि किसने मुझे निकाला है, तो वहाँ कोई नहीं था और वह व्यक्ति गायब हो चुका था। बारिश की वजह से



मैं रास्ता भूल गया, लेकिन जब ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उनके आश्रम तक पहुँचा, तो गुरु महाराज जी ने देखते ही कहा- आ गए? मैं पूरी तरह भीगा हुआ था और जैसे ही मैं प्रणाम करके बैठा, तो अपने तकिए के नीचे से एक सफेद धोती और कुर्ता निकाल करके दिया और कहा कि जाओ, अपने कपड़े बदल लो। लेकिन मैं मन-ही-मन में हिकिचाया कि साधुओं को देना चाहिए, साधुओं से लेना नहीं चाहिए। ऐसे कुछ संस्कार पहले से ही थे। वैसे साधुओं के प्रति मुझे कुछ भय और संकोच भी था, क्योंकि बचपन में मुझे ऐसा कुछ लोग कहते थे कि साधु की संगत में नहीं जाना चाहिए, क्योंकि वे आदमी की बुद्धि को भ्रष्ट कर देते हैं और घर बर्बाद कर देते हैं।

जब उन्होंने बहुत जिद की, तो मैंने कपड़े बदल लिये। फिर पास बिठाकर कहा कि तुम ज्ञान चाहते हो, हम देंगे; लेकिन तन, मन और धन देना होगा। मैंने सोचा कि अगर ज्ञान सच्चा है, तो तन, मन और धन देने में क्या नुकसान है? और अगर झूठा है या तंत्र-मन्त्र है, तो मेरा धन तो मेरे पास ही है और वैसे भी तन क्षणभंगुर है, यहीं पर मर गया, तो गया न शरीर! यदि सच्चा ज्ञान मिल जाए, तो हर्ज क्या है? यदि न मिला तो हमारी चीज हमारे पास है ही। मैंने कहा- हां जी, अगर बात सच्ची है तो तन, मन और धन देंगे। तब उन्होंने एक प्रेमी से कहा कि कमरे में कुछ बिछा दो। फिर मुझे वहां ले गए और आसन में बिठाया। उन्होंने मुझसे कहा कि हम तुमको जो बात बताएंगे, वह अगर सच्ची हुई तो किसी को न बताना और सच्ची बात हम तुमको बतायेंगे, तो तन, मन और धन तुम हमको देना और तीसरी बात यह है कि दो क्रियाएं एकांत में करना और दो क्रियाएं हर समय करना। मैंने सोचा कि अगर बात झूठी होगी, तो फिर मैं इनका भंडाफोड़ कर दूँगा और अगर सच्ची होगी, तो फिर जरूर जानना चाहिए। सन् 1922 में मुझे उपदेश हुआ। उपदेश के पश्चात मैंने अपने गांव के पास, उत्तराखण्ड की तपोभूमि में कई वर्ष तक कठोर तप और भजन किया।

श्री महाराज जी बताते थे कि उपदेश के पश्चात मैंने श्री गुरु महाराज जी की शरण में रहकर अपने जीवन को उनकी आज्ञानुसार साधना एवं प्रचार में लगा दिया। 1926 में श्री गुरु महाराज जी ने मुझे उपदेश देने की आज्ञा दे दी। श्री हंस जी महाराज की अपने सद्गुरुदेव महाराज जी के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। इसलिए वे मन-वचन-कर्म से पूर्णत उनके श्रीचरणों में सेवारत हो गये।

एक बार श्री हंस जी महाराज ने प्रेमीभक्तों एवं सेवकों को समझाते हुए कहा कि यूं तो गुरु महाराज जी की सच्चे दिल से थोड़ी बहुत की हुई सेवा भी काम आती है, लेकिन पूर्ण ज्ञान तो पूर्ण समर्पण से ही होता है। श्री महाराज जी पूर्ण समर्पण के महत्व को जानते थे, क्योंकि वे तो अपना सर्वस्व गुरुदेव को समर्पण कर चुके थे। अपने गुरुदेव के प्रति उनमें अगाध श्रद्धा और अटूट विश्वास था। गुरु कोई व्यक्ति नहीं होता, वह तो परम पुरुष है, अलख पुरुष है, जिसकी स्तुति सभी वेद शास्त्र गाते हैं। पुराने प्रेमीभक्त बताते हैं कि आरंभ में श्री हंस जी

महाराज का जीवन एक तपस्वी का जीवन था। वह उन दिनों खादी का कुर्ता, धोती, टोपी और कपड़े के जूते पहना करते थे या सिर पर कभी-कभी तौलिया रख लेते थे। श्री गुरु महाराज जी की कठोर से कठोर आज्ञा का उन्होंने सहर्ष पालन किया। अपने गुरु महाराज जी की सेवा में लीन श्री हंस जी महाराज कई वर्षों तक अपने घर नहीं गए और गृहस्थी होते हुए भी एक संन्यासी का जीवन व्यतीत करते रहे। गुरु के प्रति श्री महाराज जी में एक अगाध प्रेम था जो कि उनके रोग-रोग से प्रस्फुटित होता था।

अपने सेवा काल की एक घटना को सुनाते हुए श्री महाराज जी ने बताते थे कि हम श्री गुरु महाराज जी के सम्मुख एक कमरे में खड़े हुए थे, तो उन्होंने कहा कि पीछे हटो! हम पीछे हट गए और फिर कहा कि और पीछे हटो। लेकिन पीछे दीवार होने के कारण हम कहां तक पीछे हटें, लेकिन हमें उनके चरणों पर विश्वास था कि अगर वे कहते कि और पीछे हटो तो दीवार भी पीछे हट जाती। इस काल में श्री महाराज जी ने हर प्रकार की कठिनाइयां सहते हुए श्री गुरु महाराज जी की सेवा की। वे बताते थे कि हमने कई दिनों तक केवल भुने हुए चने चबाकर प्रचार किया, लेकिन गुरु महाराज जी की आज्ञा से कभी मुँह नहीं मोड़ा। शरीर छोड़ने से पहले स्वामी श्री स्वरूपानंद जी महाराज दरियांगंज, दिल्ली में पथारे। दिल्ली के कुछ प्रेमीभक्त जिनको श्री हंस जी महाराज ने उपदेश दिया था, वे भी गुरु महाराज जी के दर्शन करने के लिए वहां पहुँचे। स्वामी श्री स्वरूपानंद जी महाराज ने दर्शन दिए और उनसे पूछा कि तुम्हें उपदेश किसने दिया है? उनमें से कुछ प्रेमी भक्तों ने कहा कि हमें श्री हंस जी महाराज ने उपदेश दिया है; तो उन्होंने कहा कि तुम मेरे बाद इधर-उधर मत भटकना और श्री हंस जी महाराज को ही मानना, क्योंकि वे मेरे हृदय में हैं और मैं उनके हृदय में हूँ। श्री स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज की आज्ञा के अनुसार श्री हंस जी महाराज ने अपने आपको अध्यात्म ज्ञान प्रचार-प्रसार में पूर्णतः समर्पित कर दिया। वे दिन-रात देशभर में घूम-घूमकर सत्संग प्रचार करने लगे।

सत्संग प्रचार के अतिरिक्त श्री हंस जी महाराज ने अध्यात्म ज्ञान प्रचार के विस्तार के लिए साहित्य के प्रकाशन पर भी जोर दिया। सर्वप्रथम श्री महाराज जी ने 1934 में 'हंसयोग प्रकाश' नामक ग्रंथ छपवाया। हंसयोग प्रकाश श्री महाराज जी की अद्वितीय कृति है। इसमें श्री महाराज जी ने सर्व हितकारी, सर्वमान्य, ऋषियों और संतों के मत का संग्रह किया है। इसके अतिरिक्त श्री हंस जी महाराज के विचारों एवं प्रवचनों को लिपिबद्ध कर प्रेमीभक्तों एवं समाज तक पहुँचाने के लिए 1951 में एक हिन्दी मासिक पत्रिका निकाली गई, जिसका उद्देश्य संत वाणियों के आधार पर धर्म और अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों को सरल और साधारण भाषा में जनता के बीच में रखना था। इस तरह श्री हंस जी महाराज अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अध्यात्म ज्ञान प्रचार में स्वयं लगे रहे और अपने शिष्यों, भक्तों एवं अनुयायियों को भी सत्संग प्रचार में लगाया। ■

कोटि जन्म का पंथ था, पल में पहुँचा जाय

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! दुनिया में केवल भगवान का नाम ही सच्चा है और बाकी सब मिथ्या। उस सच्चे नाम को भूलने के कारण ही जीव की ऐसी गति हो गयी है। यद्यपि भगवान का वह सच्चा नाम हमारे हृदय के अन्दर ही मौजूद है, पर उस सच्चाई का ज्ञान नहीं होने के कारण मनुष्य हमेशा भटकता रहता है। चेतन में मनुष्य को संशय होता है और जड़ माया, जो साथ जाने वाली नहीं है, उसमें दिन-रात लगा रहता है। माया की प्रबल धारा में सभी जीव बह रहे हैं, परन्तु सद्गुरु की कृपा से जीव बहने से बच जाता है।

**बहते थे बहे जात थे,
लोक वेद के साथ।
पैंडे मैं सद्गुरु मिले,
दीपक दीन्हा हाथथ।।
दीपक दीन्हा हाथकर,
वस्तु दई लखाय।।
कोटि जन्म का पन्थ था,
पल में पहुँचा जाय**

हम माला, तिलक, तीर्थ, व्रत, पूजा, पाठ और रोजे-नमाज में बहे जा रहे थे। न जाने कितने दिन से बह रहे थे, पर कोई ठिकाना नहीं मिला। अब जबकि सद्गुरु मिल गये, तो उन्होंने ज्ञान-दीपक देकर हमारे अन्दर का अंधकार मिटा दिया जिससे हम माया की प्रबल धारा में बहने से बच गये।

जीव अविनाशी है, सारा संसार बाहरी कर्मकांडों में लगा हुआ है। इन बाहरी कर्मकांडों को, इन अभ्यासों को

करते-करते कितने ही जन्म बीत गये हैं। ऋषि-मुनियों के समय में भी हम थे, भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण आदि अवतारों, संत कबीरदास, गुरु

प्रकार दृढ़ और मजबूत जहाज की जरूरत पड़ती है, उसी प्रकार मायारूपी भवसागर को पार करने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता है। जो मनुष्य सद्गुरु की कृपा के बिना भवसागर से पार होना चाहता है, उसे मूर्ख बताया गया है।

**गुरु बिनु भव निधि तरइ न कोई।
जाँ बिरंचि संकर सम होई।।**

मनुष्य ब्रह्मा, विष्णु और महेश जैसा शक्तिशाली तो हो सकता है, परन्तु गुरु के बिना उसका कल्याण नहीं हो सकता है अर्थात् वह भवसागर से पार नहीं हो सकता।

एक कथा आती है कि नारद जी बैकुण्ठ में भगवान विष्णु के पास जाया करते थे। एक दिन नारद जी भगवान के दर्शन करके वापस लौट रहे थे कि अकस्मात् किसी कारण से नारद जी को वापस लौटकर भगवान के पास

नानकदेव जी, संत तुलसीदास जी आदि सन्तों के समय में भी हम थे। चाहे हम मनुष्य योनि में रहे हों या पशु योनि में रहे हों, परन्तु उस समय में भी हम थे अवश्य। चौरासी लाख योनियों की धारा में कभी ऊपर तो कभी नीचे गोते खा ही रहे हैं। अब मनुष्य जन्म मिल गया, तो लोक और वेद की धारा में बहने लगे। इस अगम धारा से सद्गुरु के बिना बाहर नहीं निकल सकते।

**करनधार सद्गुरु दृढ़ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।
समुद्र को पार करने के लिए जिस**

जाना हो गया। जब नारद जी वापस आये, तो देवदूतों को मिट्टी खोदते देखकर नारद जी ने भगवान से पूछा-प्रभु! यह देवदूत मिट्टी क्यों खोद रहे हैं? भगवान कहने लगे-नारद! निगुरा मनुष्य पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ पैर रखता है, वह भूमि अपवित्र हो जाती है। निगुरे का दिया हुआ भाग सूर्य, चन्द्र और देवता भी ग्रहण नहीं करते। चूँकि तुम निगुरे हो, इसलिए तुम्हारे यहाँ खड़े होने से भूमि अपवित्र हो गयी और इसलिए यहाँ की मिट्टी खोदकर बाहर फेंकी जा रही है। नारद जी कहने लगे-भगवान! साक्षात्



आपके दर्शन करने पर भी क्या मुझे गुरु के पास जाने की जरूरत है। भगवान विष्णु कहने लगे-नारद जी! गुरु की बात तो गुरु ही जानते हैं। बिना गुरु के साक्षात् मेरे दर्शन करने से भी कुछ नहीं होता।

नारद जी ने अपने हृदय में संकल्प किया कि और तो कौन मेरे से विद्वान और ज्ञानी मिलेगा, परन्तु मैं जो कोई भी कल प्रातःकाल सबसे पहले मिलेगा, उसी को गुरु धारण करूँगा। दूसरे दिन प्रातः ही नारद जी को सबसे पहले एक मच्छेरे के दर्शन हुए जो बहँगी में मछली भरकर नदी से आ रहा था। नारद जी ने संकल्प के अनुसार मच्छेरे को साईंग दण्डवत् प्रणाम किया तो मच्छेरा पीछे हटकर कहने लगा- अरे! तुम महात्मा होकर मुझे

प्रणाम क्यों करते हो? नारद जी ने कहा- मैंने कल संकल्प किया था कि जो प्रातःकाल सबसे पहले मुझे मिलेगा, मैं उसे अपना गुरु मानूँगा! सो अब से आप मेरे गुरु हो! मच्छेरे ने कहा- राम-राम! मैं तो मछली मारने वाला हूँ, मुझे गुरु क्यों बनाते हो? नारद जी ने कहा- कोई भी हो, मेरे तो आप ही गुरु हैं। मच्छेरे ने कहा- अच्छा! नदी के पार मेरी कुटिया है, यदि आवश्यकता पड़े, तो कभी आ जाना।

नारद जी की परीक्षा थी और हमारे लिए शिक्षा है कि गुरु की कृपा के बिना जीव का भला नहीं हो सकता। वह भगवान की एक लीला थी, वास्तव में तो भगवान ही मच्छेरे का रूप बनाकर आये थे। नारद जी विष्णुलोक में पहुँचे, तो भगवान ने पूछा- कहो नारद जी! गुरु धारण कर लिया। नारद जी कहने लगे- महाराज! गुरु तो कर लिया पर.... यह कहना ही चाहते थे कि- मच्छेरा। भगवान

कहने लगे- नारद जी! अब तो तुम कभी भी चौरासी से छूट ही नहीं सकते। क्योंकि तुमने गुरु में 'पर' लगाया है। नारद जी भगवान से कहने लगे- प्रभु! क्या कोई भी ऐसा उपाय या साधन नहीं है कि जिसके करने से चौरासी से छूट जाऊँ। भगवान कहने लगे- इसका उपाय तो गुरु महाराज ही बता सकते हैं।

नारद जी नदी पार गुरु महाराज जी के पास पहुँचे और जाते ही चरणों में लेट गये। गुरु महाराज जी ने आशीर्वाद

समुद्र को पार करने के लिए जिस प्रकार दृढ़ और मजबूत जहाज की जरूरत पड़ती है, उसी प्रकार मायारूपी भवसागर को पार करने के लिए सदगुरु की आवश्यकता है।

दिया और पूछा- कहो नारद जी! कैसे आये? नारद जी ने विष्णु भगवान के पास आने की बात सुनाते हुए कहा कि भगवान ने मेरे से पूछा कि गुरु धारण कर लिया। मैंने कहा- 'गुरु तो धारण कर लिया पर....। इतना ही कहा था कि भगवान ने कहा- 'अब तुम चौरासी से छूट नहीं सकते।' सो आप कृपा करके अब चौरासी से छूटने का उपाय बताइए। गुरु महाराज ने कहा- तुम विष्णु भगवान से कहना कि जिस चौरासी से मुझे कभी नहीं छूटना है, उसे एक कागज पर लिख दो। जब भगवान चौरासी को लिख दें, तो उसके ऊपर लेट जाना और कहना कि यह चौरासी भी आपकी बनायी हुई है और वह भी आपकी बनायी हुई है, इसलिए अब मैंने चौरासी को भोग लिया। जब भगवान पूछे कि किसने बताया तो कहना गुरु महाराज जी ने बताया है।

नारद जी भगवान के पास पहुँचे

और कहा- भगवान! जिस चौरासी से कभी नहीं छूटना है, उसे जरा कागज पर तो लिख दो। भगवान ने चौरासी का नक्शा एक कागज पर बना दिया। नारद जी ने कागज को जमीन पर रखकर उस पर लेट गये और खड़े होकर कहने लगे- प्रभु! मैंने चौरासी को भोग लिया है। भगवान ने कहा- नारद जी! यह उपाय तुम्हें किसने बताया? नारद जी ने कहा- गुरु महाराज जी ने बताया है। कहने का भाव यह है कि गुरु के बिना जीव चौरासी से नहीं छूट सकता है। धर्मदास जी भी कहते हैं-

गुरु पइयाँ लागूँ नाम लखाय दीजो रे।
जन्म जन्म का सोया मेरा मनवा,
शब्दन मार जगाय दीजो रे।।
घट अंधियार नयन नहीं सूझे,
ज्ञान का दीपक जगाय दीजो रे।।

बिष की लहर उठत घट माहीं,
अमृत बून्द चुवाय दीजो रे।।
गहरी नदिया अगम बहे धरवा,
खई के पार लगाय दीजो रे।।
'धर्मदास' की अरज गुसाईं,
अबकी खेप निभाय दीजो रे।।

परमात्मा का सर्वव्यापक नाम जो अलख है, सबके अन्दर होते हुए भी नजर नहीं आता। आँखें बन्द करके अन्दर देखते हैं, तो अन्दर अँधेरा है, बाहर आँख खोलकर देखते हैं, तो बाहर भी माया ही दिखायी देती है। इसलिए कहा है, हे गुरु महाराज! ज्ञान का दीपक जलाकर उस अलख नाम को लखा दो अथवा बता दो।

जीव गुरु महाराज जी से प्रार्थना करते हुए कहता है- हे गुरु महाराज! मेरा मन जन्म-जन्मान्तरों से मोह की नींद में सो रहा है, शब्दों की मार से इस मन को जगा दो। संसार एक गहरी नींद है, जिसका ओर-छोर नहीं है और इसकी

अगम धारा में सभी जीव बह रहे हैं, आप कृपा करके पार लगा दो। धर्मदास जी कहते हैं कि हे गुरु महाराज! अबकी बार निभा लो अर्थात् अपने चरणों की भक्ति प्रदान कर दो।

गीता में भगवान ने योग शब्द की व्याख्या की है कि किसी काम के करने की चतुरता को योग कहते हैं और गुरु महाराज जी उस योग को जानते हैं। जो गुरु के इशारे को समझ लेता है, वह तत्काल मोह-बन्धन से मुक्त हो जाता है। जैसे-

एक पनवाड़ी ने एक तोता पाल रखा था, पिंजरा उसकी दुकान के आगे लटका रहता था। एक गुरुमुख उस पनवाड़ी की दुकान से होता हुआ गुरु-दर्शन को जा रहा था। उस समय पनवाड़ी कहीं गया हुआ था। तोते ने गुरुमुख से पूछा- तुम कहाँ जा रहे हो? शिष्य ने उत्तर दिया- भाई तोते! मैं गुरु-दर्शनों को

जा रहा हूँ। तोते ने पूछा- गुरु महाराज क्या करते हैं? शिष्य ने कहा- गुरु महाराज बन्दी छोड़ होते हैं। वे जीव को सब बन्धनों से मुक्त कर दते हैं। तोते ने कहा- जब ऐसी बात है तो गुरु महाराज जी से पूछकर आना कि मैं इस लोहे के पिंजरे से कैसे छूट सकता हूँ।

शिष्य पनवाड़ी की दुकान से चलकर श्रीगुरु महाराज जी के चरणों में पहुंचा। फूल-प्रसाद जो कुछ लाया था भेंट किया, दण्डवत प्रणाम किया और आज्ञा लेकर बैठ गया। सत्संग श्रवण करने के बाद अच्छा मौका देखकर वह शिष्य गुरु महाराज जी से कहने लगा- महाराज जी! जब मैं दर्शनों के लिए आ रहा था, तो रास्ते में पनवाड़ी की दुकान पर एक तोता मिला। उस तोते ने मुझसे पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो? मैंने उत्तर

दिया- गुरु महाराज के पास जा रहा हूँ। उसने पूछा- गुरु महाराज क्या करते हैं? मैंने कहा- गुरु महाराज बन्दी छोड़ होते हैं। तब तोते ने कहा- मेरे लिए भी कोई उपाय पूछकर आना कि मैं इस लोहे के पिंजरे से कैसे छूट सकता हूँ।

इतना सुनते ही गुरु महाराज जी धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़े और स्वॉस चढ़ाकर बेहोश हो गये। शिष्य ने गुरु महाराज जी को हिलाया-डुलाया, सिर दबाया, परन्तु गुरु महाराज जी न उठे।

जो गुरु की रम्ज या उनके इशारे को समझ जाय, तो उसकी सहज में ही मुक्ति हो जाती है। गुरु का इशारा है कि अपनी हस्ती को मिटा दो। जब तक मनुष्य सब प्रकार के अभिमान को खत्म नहीं करेगा, तब तक वह संसार के बन्धनों से छुटकारा नहीं पा सकेगा।

शिष्य बड़ा दुःखी हो रहा था और सोचता था कि तोते की बात में न जाने क्या जादू था, जो गुरु महाराज जी एकदम बेहोश हो गये। दो-तीन घंटे तक गुरु महाराज उसी हालत में पड़े रहे। फिर जब गुरु महाराज उठ बैठे, तो शिष्य ने तोते की बात का दोबारा जिक्र ही नहीं किया।

शिष्य कुछ दिन तक दर्शन, सत्संग और सेवा का लाभ उठाता रहा। फिर गुरु-आज्ञा लेकर अपने घर को जाने लगा। गुरु महाराज जी ने प्रसाद दिया और शिष्य दण्डवत करके चल पड़ा। रास्ते में पनवाड़ी की दुकान पड़ी, संयोग से उस समय भी पनवाड़ी कहीं बाजार गया हुआ था। तोते ने शिष्य से कहा-दर्शन कर आये और क्या मेरी बात को भी गुरु महाराज जी से पूछा था? गुरुमुख ने कहा-भाई तोते! तू अपनी

बात को मत पूछ। न जाने तेरी बात में क्या जादू था कि जब मैंने तुम्हारी बात को गुरु महाराज जी से कहा, तो गुरु महाराज जी सुनते ही मुर्दे से होकर गिर गये। उन्हें कई घंटों में होश आया। मैंने तो फिर तुम्हारी बात का जिक्र ही नहीं किया कि कहीं गुरु महाराज जी की वही हालत फिर ना हो जाय।

गुरुमुख तो अपने घर चला गया, परन्तु गुरु के इशारे को तोता समझ गया। जब पनवाड़ी दूर से आता दिखायी दिया तो तोता मृतक होकर पिंजरे में से गिर गया। पनवाड़ी ने आकर तोते को मुर्दा समझकर पिंजड़े की खिड़की खोली। तोते को बाहर निकाल और हाथ पर रखकर इधर-उधर टटोलकर देखने लगा। पनवाड़ी सोचने लगा कि हाय! तोता कैसे मर गया। इधर तोते ने मौका देखकर पंख फैलाये और उड़ गया। पनवाड़ी हक्का-बक्का होकर देखता रह गया।

इसी प्रकार जो गुरु की रम्ज या उनके इशारे को समझ जाय, तो उसकी सहज में ही मुक्ति हो जाती है। गुरु का इशारा है कि अपनी हस्ती को मिटा दो। जब तक मनुष्य सब प्रकार के अभिमान को खत्म नहीं करेगा, तब तक वह संसार के बन्धनों से छुटकारा नहीं पा सकेगा। संसार के पदार्थों में अहंकार करके किसी ने भी कुछ नहीं पाया। रावण को सोने की लंका और परिवार का बड़ा अभिमान था, परन्तु मरते समय उसके पास दिया जलाने वाला भी नहीं रहा। इसलिए झूठे अभिमान में मनुष्य तन को व्यर्थ न गंवाओ! मनुष्य शरीर भगवान की भक्ति के लिए मिला है। शरीर के बाद ही धन और पुत्र आदि मिलते हैं जो कि सब आने-जाने वाले हैं।

सार शब्द जाने बिना, कोई न उतरसी पार

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! हमारे धर्मशास्त्रों में सत्संग की बहुत महिमा बतायी गयी है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-
**बड़े भाग्य पाइब सत्संगा।
बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा॥**

सत्संग मनुष्य को बड़े भाग्य से मिलता है। जो सत्संग हम सुनते हैं, उस पर हमें मनन भी करना चाहिए। हमें अभी जयपुर के एक प्रेमी मिले, वे कहने लगे कि हमें पता नहीं था कि यहां हमारे ही बगल में आश्रम है और यहां सत्संग होता है। जोधपुर में जब सत्संग प्रोग्राम हुआ, हमने भी सत्संग की बहती गंगा में डुबकी लगायी। सत्संग लोगों के अंदर जागृति लाने का काम करता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को सत्संग में अवश्य आना चाहिये। सत्संग में ही हमें ज्ञान जानने की प्रेरणा मिलती है। संतों ने कहा है-

**जिन ढूँढ़ा तिन पाइयां,
गहरे पानी पैठ।
मैं बावरी ढूबन डरी,
रही किनारे बैठ॥**

जो खोजता है, उसे ज्ञान जरूर मिलता है। बाइबिल में क्राइस्ट कहते हैं कि- “दरवाजा खटखटाओगे तो तुम्हारे लिये खोल दिया जायेगा।” भगवान का नाम हमारे ही घट में है, लेकिन उसका ज्ञान नहीं होने के कारण हम उसे बाहर ढूँढ़ रहे हैं। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**घट में है सूझे नहीं,
लानत ऐसी जिन्द।
तुलसी या संसार को,
भयो मोतियाबिन्द॥**

ज्ञान तो हमारे घट में है, पर अज्ञानता

के कारण वह हमें नजर नहीं आता। हम उसे बाहर ढूँढ़ने में लगे हुए हैं। संतों ने कहा कि धूंघट के पट खोल री, तोहे पिया मिलेंगे। कौन-से धूंघट के पट खोलने हैं,

समझाते हुए कहते हैं कि अंत समय में जो मेरा भजन-सुमिरण करता है, वह मुझे ही प्राप्त होता है। जब हमने अभी तक भगवान के सच्चे नाम को जाना ही नहीं, तो अंत समय में हम कैसे भजन-सुमिरण करेंगे, भगवान को कैसे प्राप्त करेंगे? अंत समय में हम माला नहीं फेर सकते, क्योंकि उस वक्त हमारे हाथ अकड़ जायेंगे। मुहं से नाम नहीं बोल सकते, क्योंकि अंत समय हमारी जिभ्या अकड़ जायेगी। भगवान का

उसके बारे में हम जानते नहीं हैं। आज हम केवल तंत्र-मंत्र को ही भगवान की भक्ति समझ बैठे हैं।

संत कबीरदास जी कहते हैं-

**तंत्र-मंत्र सब झूठ हैं,
मत भरमो संसार।**

**सार शब्द जाने बिना,
कोई न उतरसी पार॥**

वह सार शब्द क्या है, हमने अभी तक उसे जाना ही नहीं, उसे समझा ही नहीं। जब हम माँ के गर्भ में थे, तो भगवान से वादा किया था कि हमें दया करके इस नरक कुण्ड से निकाल, बाहर आकर हम तेरा भजन करेंगे। हमने भगवान से किये गये वादे को भुला दिया और बाहर आकर सांसारिक मोह-माया में फंसते चले गये। संत कहते हैं कि मनुष्य तेरी उमर थोड़ी ही है, तू आत्मज्ञान को जान। ज्ञान के बिना मनुष्य की मुक्ति नहीं हो सकती है।

भगवान श्रीकृष्ण गीता में अर्जुन को

वह क्या नाम है, जिसे हम उस समय भी जप सकें! बाबा नानकदेव जी कहते हैं-

ऊठत-बैठत सोवत-जागत नाम।

कह नानक सद् भये तिनके काम।

हम उठते-बैठते, सोते-जागते हर वक्त उस प्रभु के नाम को जप सकते हैं। उसके लिए हमें उस नाम को जानना बहुत जरूरी है। तुम्हें जो मनुष्य शरीर मिला है, उसमें तुम भोगों को भोग सकते हो और भगवान के सच्चे नाम को जानकर उसका सुमिरण भी कर सकते हो। दूसरी योनियों में भगवान का भजन-सुमिरण नहीं कर सकते।

इसलिए जो हमें भगवान का ज्ञान मिला है, खूब भजन-सुमिरण करें। संत तुलसीदास जी कहते हैं कि कलियुग में केवल भगवान के नाम का ही आधार है, जिसका सुमिरण कर मनुष्य मायारूपी भवसागर से पार उतर सकता है।



निर्मल मन जन सो मोहि पावा

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रे मी सज्जनों! आपने यहाँ पर दो दिनों तक प्रवचन सुने। आप लोगों को घर बैठे-बैठे ऐसे प्रवचन सुनने को नहीं मिलते। महापुरुष के दर्शन-पर्सन और सत्संग बड़े भाग्य से प्राप्त होते हैं।

बहुत से लोग आज मेरे पास आए, कल भी आए। भिन्न-भिन्न विचार लेकर लोग आते हैं। बहुतों की कामना है कि मेरा बेटा हो। बहुत लोग कहते हैं- हम तो निर्धन हैं, लोग अपनी-अपनी भावनाओं को लेकर आते हैं। बहुत से लोग दानी भी हैं, जो चाहते हैं कि हम अच्छा कर्म करें, ज्ञानियों को भोजन कराएँ। कोई रोता है कि मेरे परिवार से बेटा चला गया, मतलब कि जिसकी हमने सेवा की, जब वह हमसे बिछड़ जाता है, तो हमें उसकी याद आती है। पर हम लोग इस बात को भूल जाते हैं कि एक दिन हमको भी जाना है। इस संसार से एक दिन सभी को जाना है। तभी कहा-

रहना नहीं देश बिराना है।

इस संसार में कोई भी अमर नहीं रहा, सभी आए और चले गये। पर मैं उस मनुष्य को विवेकी और बुद्धिमान समझती हूँ जो मनुष्य जन्म लेकर सद्मार्ग की तलाश करता है, जो अपने परमात्मा को ढूँढ़ता है,

वह व्यक्ति महान् होता है। जब हम किसी नए स्थान या देश में जाते हैं, तो हम वहाँ के गाइड को साथ लेते हैं कि भाई, यहाँ के बारे में सुनाओ कि यहाँ क्या-क्या चीजें ऐतिहासिक हैं, वहाँ का जो स्थानीय व्यक्ति रहता

टाइम देना पड़ेगा आपको। ऐसे ही यह संसार है। जब तक हम गाइड को साथ नहीं लेंगे, तो हमें क्या पता, इस जीवन से हमें क्या प्राप्त करना है? जिसका हमें ज्ञान है, वह कार्य तो हम कर ही रहे हैं, पर ज्ञानी तो कुछ और चीज के प्रति हमें जनाता है। कहा है-

**वस्तु कहीं ढूँढ़े कहीं,
केहि विधि आवे हाथा।
कबीर वस्तु तब पाइए,
जब भेदी लीजे साथ॥**

जब भेदी को साथ लोगे, तब वह वस्तु मिलेगी। कबीर साहब कहते हैं-

**चलन-चलन सब कोई कहे,
मोहे अंदेसा और।
नाम न जानें गाँव का,
पहुँचेगा केहि ठौर॥**

जिस जगह हमें पहुँचना है, उसको जानना जरूरी है। कई लोग कहते हैं कि संसार का वैभव हमने कमा लिया, समाज में मान-प्रतिष्ठा हमने प्राप्त कर ली। बस इसे ही हम अपना कर्तव्य समझते हैं। कई लोग कहते हैं कि अभी तो हमारे

परिवार का बहुत काम है। बेटे की शादी करनी है, बेटी की शादी करनी है। संत कहते हैं, शास्त्र कहते हैं कि जब हम गर्भ में थे, तब भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि हे भगवान! मुझे इस जठरानि से निकाल, हम तेरा भजन करेंगे। अंधेरे में हमारा जीवन कितना दुःखमय हो जाता है, जब प्रकाश होता है, तो वही दुःखमय जीवन सुखमय



बन जाता है। यही जीवात्मा माँ के गर्भ में 9 महीने अनेक दुःखों को उठाती है, फिर बाहर आकर रोती है कि मैं कहाँ आ गई हूँ? वह बालक कहाँ-कहाँ की आवाज करके रोता है। कौन उसको रोना सिखाता है? हम सब भी पहले शिशु रूप में थे, हम सब भी माँ के गर्भ में रहे और जब हम बाहर आए, तो उस समय हमें बाहर का ज्ञान नहीं था। सबसे पहले माता सिखाती है कि यह तेरा पिता है, यह तेरा चाचा है, मैं तेरी माँ हूँ। मतलब कि माँ अपने बच्चे को सभी चीजों का ज्ञान कराती है। बाद में उसके अंदर तेरा-मेरा के संस्कार भर

जाते हैं और उन्हीं संस्कारों में वह बँध जाता है। जैसे सूर्य की रोशनी तो रोज होती है, रोशनी तो है, पर वह बादलों से ढक जाती है। यही बात भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! जिस तरह से बालक माँ के गर्भ में जेर से ढका रहता है, जिस तरह से अग्नि धुँ^१ से ढक जाती है, इसी तरह हे अर्जुन! यह ज्ञान भी अज्ञान से ढक जाता है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! तू मेरा भक्त है, इसलिए मैं तुझे यह ज्ञान देना चाहता हूँ। क्या अर्जुन ने पहले कोई साधन नहीं किया होगा? ऐसी बात नहीं पर भगवान जानते थे कि जो साधन मैं दूँगा, वह अर्जुन नहीं जानता है। इसलिए वे कहते हैं कि तू तत्त्वदर्शी के पास जा, दण्डवत प्रणाम कर, निष्कपट भाव से उनकी सेवा कर। जब उनकी आत्मा प्रसन्न होगी, तो वे तुझे आत्मा का ज्ञान देंगे।

हम लोग चारधाम की तीर्थयात्रा करते हैं। घर में आकर भंडारा करते हैं, मन में संतोष करते हैं कि हम तो चारधाम की यात्रा करके आ गए। पर

देखो, मन तो अशांत ही रहता है। मन शांत हो ही नहीं सकता है। मन का लक्ष्य क्या है? आप बताइए! आप सोए रहते हो और मन उस समय भी कर्म करता रहता है, वहाँ से भी वह भागता रहता है। फिर जिन साधनों को तुम करते हो, उन साधनों से यह मन कैसे रुक सकता है? बहुत से लोग माला फेरते

भी है। यह जो हमारा शरीर है- यह उसकी अमानत है, वह जब चाहे तभी ले सकता है। इसलिए जो संत लोग होते हैं, ज्ञानी लोग होते हैं जो आत्म-तत्त्वदर्शी होते हैं, वे ध्यान का महत्व बताते हैं। वे कहते हैं कि परमात्मा के नाम में ध्यान लगाने से ही मन शांत होता है और बाकी किसी प्रकार से

यह मन शांत नहीं हो सकता है। इसलिए समय के तत्त्वदर्शी की आवश्यकता होती है, क्योंकि वही हमको ज्ञान करा सकता है। देखो, कितने ही किस्म के मजहब हैं, परंतु सभी के खाने का, भोजन करने का रास्ता एक है। सभी मुँह से खाते हैं। देखने के लिए सबकी आँखें आगे ही हैं, पीछे किसी की नहीं। सुनने के लिए सभी के कान एक ही जगह पर बने हुए हैं, चाहे वह किसी मजहब का हो, किसी कौम का हो, चाहे वह किसी भी देश का हो, सबके दो ही कान होते हैं। सबके पास बोलने के लिए जुबान है, चलने के लिए पैर हैं। यह नहीं कि किसी मजहब वाले के पैर पीछे हों। धर्म कभी भी आपस में लड़ना नहीं सिखाता है।

जब भगवान बुद्ध को अंगुलिमाल मिला, तो वह बड़ा खुश हुआ कि यह बड़ा खूबसूरत व्यक्ति मेरे सामने आ गया। अब मैं इसकी उंगली काटूँगा। उसको हारों का शौक था, मनुष्य की उंगलियों का हार बनाने का शौक। बुद्ध उससे पूछते हैं, तू ऐसा काम क्यों करता है? जब तूने मनुष्य को बनाया ही नहीं, तो फिर तू मनुष्य की उंगलियों को क्यों काटता है? वह कहता है कि नहीं, मैं इन विचारों को नहीं मानता हूँ। जैसे बहुत से हठधर्मी लोग होते हैं,

मैं उस मनुष्य को विवेकी और बुद्धिमान समझती हूँ जो मनुष्य जन्म लेकर सद्मार्ग की तलाश करता है, जो अपने परमात्मा को ढूँढ़ता है, वह व्यक्ति महान् होता है।

हैं, परंतु उनका मन कहीं और भागता रहता है। हम हिन्दू-धर्म या सिख-धर्म या जैन-धर्म के अंदर (अपने-अपने धर्म के अनुसार हर व्यक्ति) साधन करते हैं। अभी एक छोटा-सा नेपाली बालक मेरे पास आया था। वह इशारा कर रहा था-ध्यान की बात करने का, अंदर में रखने का, पर उस तत्व को वह समझता नहीं है। इसलिए हमारा मन भटक जाता है।

अपने परिवार में रहते हुए जब परिवार का कोई सदस्य हमसे बिछुड़ जाता है, तो बार-बार हमको वही व्यक्ति याद आता है कि वह हमारा था और कहाँ चला गया? जरा भी हृदय के अंदर वैराग्य नहीं। अगर वह हमारा होता, तो वह हमारे पास रहता। जिसकी वस्तु है, वह ले गया। वह जब चाहे तभी उठाकर ले जाता है। आप देखिए कि जब किसी को आप कर्जा देते हो, किसी की मदद करते हो, तो जब चाहे तब आप उसके द्वार पर खड़े हो सकते हो कि ला भाई, मेरी अमानत। यही बात भगवान की

वे कहते हैं कि भगवान नाम की कोई चीज नहीं है, जैसे कि उनके श्वासों को उनके माता-पिताओं ने वसीयत में दिया हो। परंतु नहीं, उन श्वासों को देने वाला कोई और है।

अंगुलिमाल पहले तो बोला कि मैं इन बातों को नहीं मानता हूँ, परंतु जब बुद्ध ने उसको समझाया तो अंगुलिमाल भी उनका शिष्य और भिक्षुक बन गया। इसी तरह रत्नाकर के बारे में आता है कि वह डाकू था। उसको जब नारद मिलते हैं, तो वह कहता है कि आहा! आज मैं तुझे मारूँगा, तब नारद जी उससे कहते हैं कि देख! तू मुझे बाद में मारना, पहले अपने परिवार के लोगों से पूछकर आ कि मैं जो पाप करके लाता हूँ, जो चोरी करके लाता हूँ, उसके भागीदार, उस पाप के भागीदार तुम भी बनोगे? उसने अपने घर जाकर परिवारजनों से, पत्नी से

और माता-पिता से पूछा, तो उन सबने कहा कि नहीं, हम तुम्हारे इस पाप के भागीदार नहीं बनेंगे। यदि तुम्हारी उंगली अग्नि में डालें, तो तुमको ही दर्द होगा। आदमी जैसा कर्म करेगा, उसे उसका वैसा ही फल मिलेगा। हमें तो पता ही नहीं कि तू पाप की कमाई लाता है। इसलिए हम भागीदार नहीं बनेंगे। जो जैसा कर्म करेगा, वह उसका वैसा ही फल पायेगा। नारद जी का सत्संग सुनकर रत्नाकर का मन बदल गया। रत्नाकर ने नारद जी पैरों में गिरकर क्षमा मांगी तथा उनसे आत्मज्ञान को जानकर अपने जीवन को धन्य किया।

मनुष्य का मन बड़ा चंचल है, लेकिन संत-महापुरुषों का ज्ञान बड़ा सूक्ष्म है। महापुरुष कहते हैं कि इस

मन को भगवान के नाम में जोड़, यह जो तेरी चित्त-वृत्ति बाहर को भाग रही है, इसको अन्दर की तरफ को मोड़। मनुष्य चित्त-वृत्ति को अंदर की तरफ न मोड़ करके उसको बाहर की तरफ फैलाता है तो क्या होगा, अपना भी नुकसान व दूसरों का भी नुकसान होगा। वह क्या करेगा? आप तो डूबेगा ही, साथ में दूसरों को भी ले डूबेगा। इसलिए तुलसीदास जी ने उनकी भी वन्दना की जो दुष्ट प्रकृति के लोग थे और जो सज्जन थे, उनकी भी उन्होने

जायें, एक के आदेश में नहीं रहें, तो परिवार भी छिन्न-भिन्न हो जाता है। ठीक इसी तरह यह अध्यात्म-मार्ग है। अध्यात्म-मार्ग बड़ा सूक्ष्म मार्ग है। इस मार्ग में छल-कपट नहीं चाहिये। भगवान श्रीराम भिलनी को समझाते हुए कहते हैं-

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।

मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥

वह कहते हैं कि छल-कपट तो मुझको चाहिए ही नहीं और आज मनुष्य छल-कपट भी करना चाहता है

और परमार्थ का आनन्द भी लेना चाहता है। भाई दोनों चीज एक साथ नहीं मिल सकतीं। छल-छिद्र को छोड़ दो, तभी परमानंद की अनुभूति कर सकते हो। तो मेरा मूल विषय यह था कि बहुत से लोग सुनी-सुनाई अफवाहों में भ्रमित हो जाते हैं और बहुत ऊँचाई पर पहुँचे हुए लोग भी

वन्दना की। सन्त और असन्त की तुलना उन्होंने बराबर की। कहा कि सन्त के आने से घर में खुशी होती है, घर पवित्र होता है, आत्मा प्रसन्न हो जाती है तथा उसका दर्शन करके जीवन सफल हो जाता है। जब घर में असंत आ जाता है, खराब व्यक्ति आ जाता है, तो उसके डर से सारे परिवार को अगाध दुःख पहुँचता है और जब वह बिछुड़ता है, तब सुख होता है। सन्त जब बिछुड़ता है, तब दुःख होता है। दोनों की उपमा उन्होंने बराबर दी। जैसे कि राजनीति में एकता से लोगों ने बड़े-बड़े काम किये। जब एकता समाप्त हो जाती है, तब मनुष्य कुछ कर नहीं सकता है। अलग-अलग होकर वह कमज़ोर हो जाता है। जब परिवार के सभी व्यक्ति आर्डर देने लगे गिर जाते हैं। संतों ने कहा है कि जब तक अपनी आँखों से न देखो, अपने कानों से न सुनो, तब तक न मानो। देखो महापुरुषों का जो ज्ञान है, वह सत्य होता है। महापुरुष कभी भी तुम्हें गलत मार्ग में नहीं लगायेंगे। सत्य मार्ग में ही लगाने की वे कोशिश करते हैं, पर मनुष्य सत्य को जानने की कोशिश नहीं करता है। मनुष्य सोचता है कि ये मेरा अहित चाहते हैं। मुझसे कुछ लेना चाहते हैं। तुम्हें मार्ग से गिराने के लिए बहुत से लोग प्रयत्न करेंगे। सही मार्ग में लगाने का प्रयत्न नहीं करेंगे। ऐसा तो केवल महान शक्तियाँ ही कर सकती हैं, दूसरा नहीं कर सकता है। इसलिए महापुरुषों के महत्व को समझ कर उनके सानिध्य का लाभ उठाओ।

जो आत्म-तत्त्वदर्शी होते हैं, वे ध्यान का महत्व बताते हैं। वे कहते हैं कि परमात्मा के नाम में ध्यान लगाने से ही मन शांत होता है और बाकी किसी प्रकार से यह मन शांत नहीं हो सकता है। इसलिए समय के तत्त्वदर्शी की आवश्यकता होती है।

वन्दना की। सन्त और असन्त की तुलना उन्होंने बराबर की। कहा कि सन्त के आने से घर में खुशी होती है, घर पवित्र होता है, आत्मा प्रसन्न हो जाती है तथा उसका दर्शन करके जीवन सफल हो जाता है। जब घर में असंत आ जाता है, खराब व्यक्ति आ जाता है, तो उसके डर से सारे परिवार को अगाध दुःख पहुँचता है और जब वह बिछुड़ता है, तब सुख होता है। सन्त जब बिछुड़ता है, तब दुःख होता है। दोनों की उपमा उन्होंने बराबर दी। जैसे कि राजनीति में एकता से लोगों ने बड़े-बड़े काम किये। जब एकता समाप्त हो जाती है, तब मनुष्य कुछ कर नहीं सकता है। अलग-अलग होकर वह कमज़ोर हो जाता है। जब परिवार के सभी व्यक्ति आर्डर देने लगे

जो कीली से लागा रहे, वाको काल न खाय

माताश्री मंगला जी

प्रे मी सज्जनों! यह जो सत्संग किया जाता है, यह आपके कल्याण के लिए किया जाता है। इसमें मुक्ति का साधन बताया जाता है कि यह जो संसार है, यह कागज की पुड़िया के समान है। मौत रूपी पानी की एक बूंद इस पर गिरेगी, यह गल जाएगा। हम अपने सामने अपने प्रिय को भेज करके आ जाते हैं, तब थोड़े समय के लिए वैराग्य होता है, ज्यादा वैराग्य भी नहीं होता। फिर आदमी सोचता है कि कमाना भी है, इसका बिल भी देना है, उसकी बेटी की शादी करनी है, उसके बेटे की शादी करनी है, मकान भी बनाना है और यह भी करना है, वह भी करना है। उप्र से ज्यादा लंबी लिस्ट कामों की बन जाती है; फिर धीरे-धीरे करते-करते, सब कुछ यहीं समाप्त हो जाता है। हमारे लिए सत्संग एक ऐसा माध्यम है, जिसे श्रवण कर हम सत्य बात को समझ जाते हैं, हमारे अंदर की बुराइयां दूर हो जाती हैं; और जब हम सत्संग समझते हैं, तो उस परमात्मा को कहां-कहां ढूँढ़ते हैं, तो भगवान भी कहते हैं कि-

मोको कहां ढूँढ़े रे बंदे,

मैं तो तेरे पास मैं।

रे बंदे, मैं तो तेरे हृदय में हूं, फिर कैसे जाना जाएगा, जब हृदय में है और हृदय में रहने के बावजूद हम उसको देख नहीं पा रहे हैं। हम उसको समझ नहीं पा रहे हैं। हम सोचते हैं कि हमने भजन गा-

दिया, हमारे जीवन को एक चेतना देने के लिए संतों ने भजन बनाए हैं कि-

नारद मुनि को इतनी अँथोरिटी थी कि वे स्वर्ग में भी चले जाते थे। एक दिन जब वे गए तो उन्होंने देखा कि जैसे ही वो उठे तो उनके आसन को साफ करके संभाल रहे हैं, तो उनके अंदर संशय हुआ कि जब मैं इतना बड़ा ज्ञानी हूं, जो मैं स्वर्ग में आ सकता हूं, तो मेरे उठने के बाद मैं मेरा आसन ये साफ क्यों कर रहे हैं, तो रुक गये और उन्होंने पार्षदों से पूछा- भाई,

मेरे जाने के बाद मेरे आसन को साफ क्यों कर रहे हो? तो भगवान के पार्षद कहते हैं कि महाराज, आप निगुरा हो, वे भगवान विष्णु के पास जाते हैं और पूछते हैं कि मैं सशरीर वैकुंठ धाम में आकर आपका साक्षात दर्शन करता हूं, फिर भी क्या मुझे गुरु धारण करने की आवश्यकता है। भगवान कहते हैं कि नारद जी, बिना गुरु के मेरे वास्तविक स्वरूप का बोध नहीं होता है। इसलिए तुम गुरु धारण करो। नारद जी ने कहा कि आप ही मेरे गुरु बन जाओ या मुझे रास्ता दिखाओ कि किसे मैं अपना गुरु बनाऊँ। तब भगवान ने कहा कि सुबह-सुबह जो व्यक्ति सबसे पहले मिले, तुम उसी को अपना गुरु बना लेना। अध्यात्म को जानने के लिए हमें समय के सद्गुरु के पास जाना होता है। सद्गुरु से ही अध्यात्म ज्ञान प्राप्त होता है। तभी तो गुरु का महत्व है; तभी तो गुरु महाराज का आना होता है। वह हमारे को उपदेश



**रे मन यह दो दिन का मेला रहेगा,
कायम ना जग का झामेला रहेगा।**

इस जग को झामेले की संज्ञा दी है। इस संसार में लाखों-करोड़ लोगों का जन्म हुआ, महान पुरुष आए, संत-महात्मा आए, लेकिन सबको जाना है, लेकिन कहां जाना है, इस बात को समझने के लिए हमें अध्यात्म ज्ञान की खोज करनी चाहिए। सिद्धार्थ के पास कोई कमी नहीं थी और सिद्धार्थ अपने जीवन में जब धूमने निकले तो शव यात्रा देखे, एक बीमार आदमी को देखे और एक बूढ़े आदमी देखे। ये सब दृश्य देखकर उनके अन्दर वास्तविकता को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। जो मनुष्य कुछ समय पहले तक जिंदा था और आज यह संसार छोड़ कर कहां जा रहा है, तो इसीलिए हम अध्यात्म के ज्ञान की खोज करते हैं।

आज हम नारद मुनि का संस्मरण सुनते हैं। नारद मुनि की याद करते हैं,

देते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं कि-
आप जपे औरों को जपावे।
नानक निश्चय मुक्ति पावे॥

जब इतने बड़े संत उसको निश्चय कह रहे हैं, तो निश्चय होगा ही। खुद भी सुमिरन करते हैं और सबको सुमिरन करने की प्रेरणा देते हैं; क्योंकि जीव के हाथ में कुछ नहीं है, जिस तरह पतंग उड़ती है ना, पतंग कोई खींच रहा है। पर जिस समय वह अपने हाथ से उसकी डोर छोड़ देगा, वह धरती पर गिर जाती है। इसीलिए संतों की जो वाणी होती है, उसको समझना चाहिए, उसमें समझ की बात होती है, वैराग्य की बात होती है। भगवान राम का भी तो राजा के घर में जन्म हुआ और जब वनवास का समय आया, तो उन्होंने कोई दुःख प्रकट नहीं किया। वह वनवास भी गए, लेकिन किसके लिए गए, भिलनी के लिए गए। भिलनी वर्षों से उनका इंतजार कर रही थी कि हे प्रभु, आप अवश्य आएंगे, आप मेरी भक्ति को देखकर आएंगे।

आप आएंगे और मैं आपको भोग लगाऊंगी; और वह प्रेम में इतनी बावली हो गई कि अपना जूठन खिलाती है, भगवान को बेर चख-चख के खिलाती रही, जिससे कि पता चले कि बेर खट्टे ना हों, लक्ष्मण जी बड़े गौर से देख रहे थे कि भिलनी तो जूठे बेर खिला रही है, तो ये सब उदाहरण हमें प्रेरणा देते हैं। जब हम इस संसार में आए, तो हमें संसार के सब कर्म करने हैं या तो सब छोड़-छाड़ के हिमालय की तरफ चले जाइए या जब संसार में रह रहे हैं, समाज में रह रहे हैं, परिवार में रह रहे हैं, तो पूरी जिम्मेदारी निभानी पड़ेगी और निभानी पड़ती है। पर, वह सब करने के बाद भी हम अपने मन को परमात्मा में लगाकर

रखें।

कर से कर्म करो विधि नाना।
मन राखो जहां कृपा निधाना॥

इसलिए, क्योंकि मन संसार में भटक जाता है और जब मन भटक जाता है, तो उसको लगाने के लिए एकमात्र परमात्मा का नाम ही ऐसा

अध्यात्म को जानने के लिए हमें समय के सद्गुरु के पास जाना होता है। सद्गुरु से ही अध्यात्म ज्ञान प्राप्त होता है। तभी तो गुरु का महत्व है; तभी तो गुरु महाराज का आना होता है। वह हमारे को उपदेश देते हैं।

साधन है, जो मन को हमारे प्राणों में केंद्रित करता है। संत कबीर ने चलती चाकी देख कर कहा-

चलती चाकी देखकर,
दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में,
साबुत न बचा कोय॥

जब दया की भावना होती है ना हृदय में, तो एक छोटा जीव भी मरता है, एक मक्खी भी मरती है, मच्छर भी मरता है, तो उस आदमी को लगता है कि यह तो समाप्त हो गया, तो एक अलग तरह का विचार मन में आता है, चाहे छोटा हो, चाहे बड़ा हो; तो चलती चक्की देख कर कबीर रो दिए, उनको अनाज के दाने पिसने से शिक्षा मिल गई। आप भी देखते होंगे कि चक्की के दो पाटों के बीच में जब अनाज पिसता है, तो उसका आटा बन जाता है।

लेकिन कमाल, जो उनका पुत्र था, वह यह सब देख-सुन रहा था कि पिताजी चलती चक्की देखकर कुछ दुखी हैं, तो कमाल कहता है, नहीं पिताजी-

चलती चाकी देख के,
दिया कमाल ठाय।
जो कीली से लागा रहे,
वाको काल न खाय॥

जो नाम रूपी सूत्र हम सबके अंदर है, अगर हम उसे भूल जाएंगे, तो शरीर समाप्त हो जाएगा; उसी दिन इसका अंत हो जाएगा। और उस नाम रूपी सूत्र का तब भी अंत नहीं होगा; क्योंकि वह अजर, अमर, अविनाशी है, केवल मानुष चोला समाप्त होगा। तो यह सोचो कि भगवान ने इस मनुष्य योनी में हमें कितना सुख दिया है, सारे सुख दिए हैं, दुःख का कारण तो मनुष्य का अपना मन है। हम सब ने वही जानना है, चाहे देवपुरुष हो, चाहे संसार का सामान्य प्राणी हो, चाहे बड़े से बड़ा मनुष्य हो, यानी मनुष्य को सृष्टि का क्राउन ऑफ क्रिएशन कहा गया है। इससे बड़ी तो कोई वस्तु नहीं है, उसने भी जब जाना तो यह विचार आने पर ही जाना कि हम इस संसार में क्यों आए हैं। यह विचार कर हम जीवन लक्ष्य को जानकर उसे प्राप्त करने का लक्ष्य बना लें, तो हम शीघ्र ही उस परमेश्वर को प्राप्त कर सकते हैं।

संत कहते हैं कि तैनीस करोड़ देवता हैं, वे भी मनुष्य शरीर प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं। परन्तु भगवान ने हमारे ऊपर कृपा की है, तभी हमें चौरासी लाख योनियों के बाद मानुष चोला मिला है। इसलिए इसकी कद्र करो। अभी हम सब हरिद्वार आए हैं, यहाँ गंगा जी में नहाएंगे, फिर अच्छा प्रसाद खाएंगे और पल्ला झाड़ करके चले जाएंगे। आज सब्जी अच्छी बनी है, कल भंडारा क्या खाएंगे। बस, यही विचार रह गया, तो यहाँ आने का कोई लाभ नहीं है।

LEARN THAT HOLY NAME MAHADEVA HIMSELF MEDITATED ON

SHRI HANS JI MAHARAJ

Dear Premies, A man today said that although he took the lessons of Divine Knowledge but he didn't experience any bliss. People want to believe that the lessons themselves would lead to bliss. Obviously, if learning alone led to inner bliss then why would our holy scriptures talk about service and attending spiritual discourses? Joy and bliss comes with regular practice. How can I speak about the glory of Holy Name, since Saint Tulsidas Ji says that even Lord Ram, a God incarnate couldn't speak the complete glory of Holy Name.

Mirabai explains that the fundamental essence of this universe is the Divine Nectar. The Holy Name saves you from death and liberates you. You tell me, has anyone gone beyond death without the power of Holy Name? Once Saint Tulsidas Ji was going somewhere and a woman on the way to become Sati crossed his path. It is written in our holy books that one should respectfully salute Saints. If you go to a wise seer and offer your deep respects through salutations then he will share with you the liberating and eternal Holy Name.

This woman politely saluted Saint Tulsidas and he blessed her with a happy married life. The woman was astonished

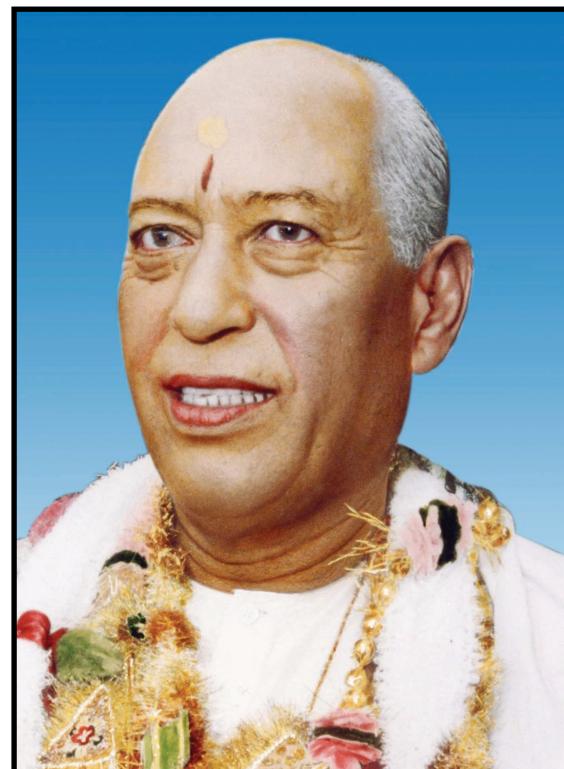
and replied that the words from the mouth of Saint would always come true. When Saint Tulsidas Ji heard this then he asked the corpse of the woman's husband to be put on ground, and asked everyone to remember the Divine Spirit. Tulsidas Ji also started meditation on the Holy Name. After some time he took water and sprinkled it on the dead body, and the body became alive. Nature changed because of the power of Holy Name. Similarly, when Prahlad was tied to a pole, then fire lost its principle (heat) and became cold.

The essence of the Vedas is Self Knowledge. That which is truth, is written in the Vedas by Rishis and God Brahma. Self Knowledge is understanding and experiencing this truth, this Holy Name.

“Conclusion of holy books and Saints is the same,

“That the reward of good karma is love for Holy Name.”

Lord Shiva is considered a God because he understood the power of Holy Name. He meditated on Holy Name, and in the city of Kashi spread the teachings of Holy Name which



has no beginning and no end. Mirabai says:

“Dear Mind, you meditate on Holy Name,

“Go to Saints after leaving your old company behind,

“And listen to spiritual discourses,”

“Expel lust, pride, greed, anger and attachment,

“Mira’s God is Lord Krishna,

“Dear Mind, you meditate on Holy Name.”

People of this world don't understand this essence. In Gita (lesson 3, 34th stanza) it is written that one should go to Saints and ask for knowledge. Today many wise men debate and talk about it but do not themselves do proper practice to develop a better understanding. The goal

of human life is to experience Holy Name, as this can only be achieved in a human birth.

"If one should nurture a worry,

Then let it be about remembering Holy Name.

Because all other worries,

Will entrench you further in this vicious cycle."

In Gita, it is written that if the mind is aligned with anything other than Holy Name then this cycle of birth and death cannot be stopped.

When Satyuga, Treta, Dwapar and Kaliyuga pass then one cycle is completed and when such 1000 cycles are completed then that is equivalent to a single day of Brahma, and similarly 1000 such cycles constitute his single night. Brahma's age is 100 years, and after that he also rests in peace. This house that you see, Brahma is the one who built the brain or mind of the person that designed and built this house. And after 100 years of his life, even Brahma will be no more. This universe is so big that no one can describe it completely.

If a seed gets wet then it turns bad and doesn't grow properly. But the same seed sprouts a plant when sown in the ground and watered by rains. This is God's power, and similarly it is his great and amazing power that the one that creates this world (Brahma) also has to rest one day. Lord Ram tells Laxaman:

"Only that person is deeply

detached,

Who leaves behind popularity, powers and the 3 elements (gunas)"

A person met a Sadhu, who asked him to distribute something but the vessel would miraculously never become empty. Even if you get such powers, you will not get liberated. A devotee also met a Sadhu who told him that he could transform himself into a lion or a pig. The devotee started performing service towards this Sadhu. This devotee met another devotee and said to him that Shri Guru Maharaj Ji never teaches us about such powers of transformations. The second devotee asked him to find out about Sadhu's further spiritual development plans. But when he spoke with the Sadhu, he realized there were none. In fact the Sadhu expressed a desire to learn Divine Knowledge. The devotee asked him to go to Saints to learn Holy Name. Transformation into the form of a lion or a pig won't bestow salvation on you. One anyway turns into lion, pig, elephant, ox etc during the normal course of soul's evolution then of what use is this specific power?

One person had the power that he couldn't drown in water. He always floated right above it and could cross the river by just walking on it. Another person mentioned that this great power is just worth Rupee 1, as that is the amount it takes to pay to

cross the river on a boat. Another person had a power that anything he touched would turn into gold. He died of hunger, as his food would turn into gold upon contact.

Many so called wise and great people many times take gullible people down the wrong path and keep them away from meditation practice. That is why Mirabai says that one should leave behind worldly chains and sit in spiritual discourses. Human birth is extremely rare, and you may not get it again.

In the olden days, India used to be very prosperous. If you asked for water, you would get milk. Satyug, Treta and Dwapar have already passed and Kaliyuga is in progress, and how many people would have drunk milk until today? And still the supply is there. Now government has established control over milk supply to ensure that everyone can obtain it.

Our minds have developed to great extends and we can establish control through a standard process. But look at God's impeccable arrangements that both a rich and a poor kid both satiate themselves from their mother's breasts. Whether one is an American or Indian, Muslim or Christian, each spends 9 months in the womb and endures same kind of problems. If it were upto man himself then many poor kids would have died of hunger.

समय की तीन चीजें

श्री

हंसजी महाराज अपने प्रवचन में अक्सर कहते थे- तीन चीजें समय की ही होती हैं- एक तो राजा, जैसे कि समय के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू हैं, उनसे मिलेंगे तो वे हमें नौकरी भी दे सकते हैं, धन भी दे सकते हैं, लेकिन जो गत राजा हैं, या शासक हैं, वे हमारी क्या मदद कर सकते हैं, अब उनके गीत गाने से क्या मिलेगा? दूसरा समय का वैद्य, हकीम या डॉक्टर होता है। अगर पिछले हकीमों की तलाश करें, लुकमान या धनवंतरी वैद्य को ढूँढ़ें या उनकी महानता गाएं तो मरीज को क्या लाभ हो सकता है? लेकिन समय के डॉक्टर से हमें मदद मिल सकती है। उसकी दवा से रोग

भी ब्रह्मज्ञान का बोध करा सकता हो। आजकल झूठे गुरुओं की भरमार हो रही है। लोग तंत्र-मंत्र बताने वालों को, कान फाड़ने वालों को, कंठी माला देने वालों को, यज्ञ और पूजा पाठ करने वालों को गुरु मान लेते हैं। पर शास्त्र तो कहते हैं कि सद्गुरु वह है जो सच्चा नाम और सच्ची रोशनी को घट में दिखा दे और शब्द और सुरति का मेल करा दे।

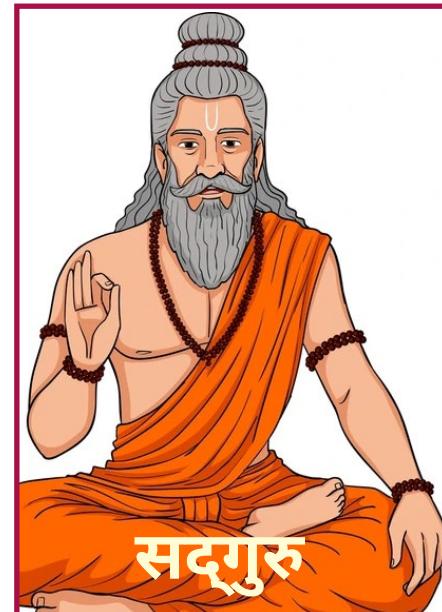
गुरु वह होता है जो केवल स्टेज पर लेक्चरबाजी न करे; बल्कि जो उस नाम और प्रकाश का प्रैक्टीकल ज्ञान करा दे। उसी नाम और प्रकाश के जानने से मनुष्य सुधर सकता है। और चाहे कितने उपाय कर लो, मनुष्य का सुधरना बहुत



राजा



डॉक्टर



सद्गुरु

दूर हो सकता है। तीसरे समय के गुरु या रहबर, जैसे ईसा मसीह या मोहम्मद साहब हुए। उन्होंने लोगों को उपदेश दिया। राम और कृष्ण भगवान ने, भगवान बुद्ध ने, गुरु नानकदेव जी ने लोगों को समझाया। अगर हम यह चाहें कि हमें भी वही आकर समझाएं या बिना समय के गुरु के केवल उनके ग्रंथ पढ़ने से वही ज्ञान हो जावे, तो यह कैसे हो सकता है? इसलिए समय के गुरु की आवश्यकता होती है। लेकिन गुरु कैसा होना चाहिए, यह भी हमें जानना चाहिए। 'गु' नाम अंधकार 'रु' नाम प्रकाश, जो अंधेरे को उजाले में बदल दे, उसे गुरु कहते हैं। बहुत सारे लोग कहते हैं कि गुरु तो धारण कर लिया है, पर उजाला नहीं हुआ। जब सूर्य के निकलने पर भी अंधेरा दूर नहीं हुआ तो कैसे अंधेरा दूर होगा? गुरु तो वही है जो स्वयं ब्रह्म को जानता हो, प्रकाशमय हो और दूसरों को

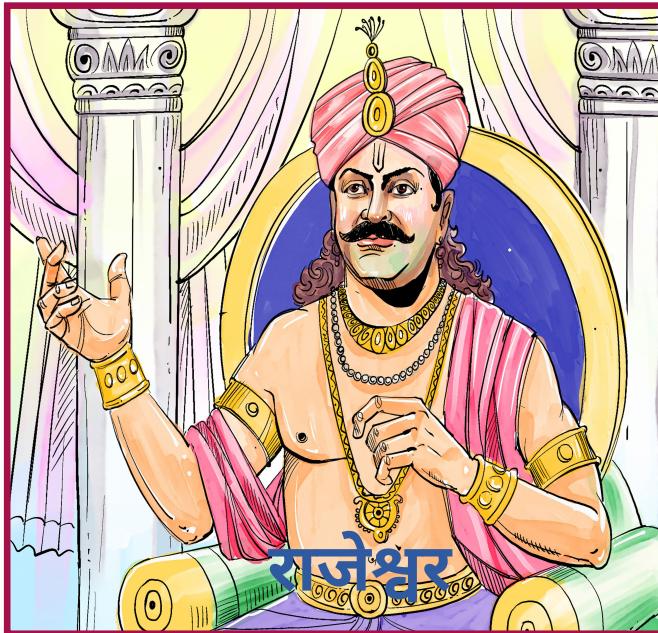
कठिन है। इसलिए सद्गुरु द्वारा ध्येय को जानकर उसमें ध्याता अपना ध्यान लगाए यही चित्तवृत्ति के निरोध का तरीका है और इसे ही हमारे शास्त्रों में योग कहा है। हम इसी तत्त्वज्ञान का प्रचार करते हैं। हमने कई नेताओं को उपदेश भी दिया। डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने, वे हमारे उपदेशी थे। राजा महेन्द्र प्रताप को भी हमने उपदेश दिया। सुभाष चंद्र बोस को भी हमने सत्संग सुनाया। हमने तो सदैव इस देश की भलाई की सोची है और हमारा तो यही विश्वास है कि यह देश पहले भी गुरु था, अब भी गुरु है और आगे भी संसार का गुरु होगा। इसका उत्थान अध्यात्मवाद से ही हो सकता है। केवल विदेशों की नकल करने से यह देश महान नहीं हो सकता और न ही संसार का गुरु हो सकता। ■

वैराग्य की परिणति ही भक्ति है

मनुष्य इस संसार में सुख की खोज में भटकता हुआ हर क्षण नश्वर चीजों में आनंद पाना चाहता है। वस्त्र-आभूषण, धन, यश, रंग-रूप और संबंध आदि सबको पाने की लालसा उसकी कभी शांत नहीं होती। परंतु भर्तृहरि के वैराग्य शतक के श्लोक बतलाते हैं कि यह सब मृगतृष्णा के समान हैं; जितना पीछे भागो, उतनी ही दूरी बढ़ती जाती है।

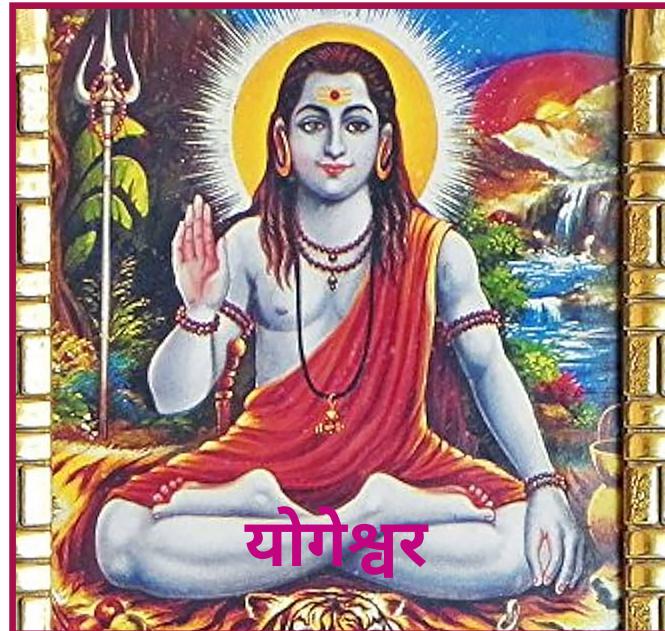
भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तः।
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः।
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥

इस गहराई में छिपा संदेश यही है कि मनुष्य को वह पकड़ना चाहिए जो कभी न छूटे और वह है परमात्मा का साक्षात्कार। असार संसार की माया के संबंध में भर्तृहरि ने लिखा कि जब तक सांसों की गिनती पूरी नहीं हुई, मनुष्य संकल्प और विकल्प में रहा रहता है। यह संसार झूठे सुखों का जाल है। जो वस्तु आज हर्ष देती है, कल वही विषाद का कारण बन जाती है। यौवन, सौंदर्य और धन ये तीनों नश्वर वृक्ष पर टिकी मृगमरीचिका हैं। जब यह ज्ञान जागृत होता है कि यह सब असार है, तब मनुष्य भीतर से मुक्त होता है। उस अवस्था में प्रभु के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। तभी आत्मा कहती है—“जो मुझे बनाकर यह जगत रचने वाले हैं, उन्हीं की शरण



संसार की नश्वरता का बोध प्रदान करते हुए भर्तृहरि कहते हैं कि यह जीवन क्षणभंगुर है। यौवन ढलता है, धन घटता है, मित्रता स्वार्थ पर आधारित रहती है केवल प्रभु का नाम सुमिरन और प्रभु को पाने की साधना ही अमर है। एक श्लोक में उन्होंने कहा है कि जैसे झरने से गिरती बूँदें मिट्टी में समा जाती हैं, वैसे ही यह जीवन पल भर में समाप्त हो जाता है।

अवश्यं माताराश्चिरतरमुषित्वापि विषया,
वियोगे को भेदघ्यजाते न जनो यत्स्वयममून्।
व्रजन्तः स्वातन्त्र्यादतुल परितापाय मनसः,
स्वयं त्यक्ता होते शमसुखमनन्तं विदधति॥।



मैं शांति हूँ। ईश्वर अनुराग के आविर्भाव हेतु आवश्यक वैराग्य लाने का अर्थ संसार का त्याग नहीं, बल्कि सही दृष्टि है। जब मन समझ लेता है कि जीवन का वास्तविक सुख किसी वस्तु या व्यक्ति में नहीं, बल्कि उस परम चेतना में है जिसने सब रचा है, तब भक्ति जागृत होती है। वैराग्य की परिणति ही भक्ति है और भक्ति से उत्पन्न होता है अमर आनन्द, जहाँ ‘मैं’ और ‘मेरा’ का भेद मिट जाता है। वैराग्य शतक हमें केवल संसार से विमुख होने का उपदेश नहीं देता, बल्कि यह सिखाता है कि त्याग के बाद क्या अपनाना है और वह है प्रभु का प्रेम। जो यह समझ लेता है, वही सच्चा ज्ञानी कहलाता है। ■

सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुःख जाय

मा नव जीवन का सर्वोच्च गहना है, प्रभु के सत्य नाम का सुमिरन। नाम स्मरण, वह साधन है जिससे मन निर्मल होता है, दुःख मिट जाते हैं और आत्मा दिव्य ज्योति में लीन हो जाती है। संत कबीरदास, गुरु नानकदेव और संत तुलसीदास ने सुमिरन की महिमा गाई है। कबीरदास जी कहते हैं कि जिस क्षण मनुष्य सुमिरन करता है, उसी क्षण भीतर का दुःखरूपी अंधकार मिटता है। संत कबीर कहते हैं-

**जबही नाम हृदय धरा,
भयो पाप का नाश।
जैसे चिनगी आग की,
परी पुरानी घास॥**

वे स्पष्ट कहते हैं कि मन को शुद्ध करने के लिए किसी बाहरी साधन की आवश्यकता नहीं केवल नामजप ही अमृत समान है। उनके शब्दों में संदेश यह है कि सुमिरन करते हुए मनुष्य जैसे-जैसे भीतर जाता है, वैसे-वैसे वह अपने भीतर के ईश्वर से मिलन की ओर अग्रसर होता है। गुरु नानक जी ने नाम सिमरन को आत्मज्ञान का द्वार बताया। उन्होंने कहा कि सुमिरन से मन स्फूर्त होता है, हृदय में दया, शांति और प्रेम का संचार होता है। गुरु ग्रंथ साहिब में स्पष्ट कहा गया है।

नाम जपत दुख सब नाश होई। यह कोई कल्पना नहीं; यह आत्मानुभूति का प्रमाण है।

सुमिरन वह दीपक है जो अहंकार, लोभ और मोह के अंधकार को जलाकर नष्ट कर देता है। जब साधक सच्चे भाव से सुमिरन करता है, तब उसकी चेतना बाहरी संसार से विमुख होकर अंदर की चेतना में प्रविष्ट होती है।

प्रत्येक नाम-मंत्र के उच्चारण से एक सूक्ष्म कंपन उत्पन्न होता है, जो मन के विकारों को शुद्ध करता है। जब सुमिरन सहज हो जाता है, तब मनुष्य का मन स्थिर होता

है, विचार शांत होते हैं और आत्मा उस परम ज्योति में लीन हो जाती है। यह अवस्था अनुभव की होती है, जहाँ साधक कहता है, “मैं, मेरा कुछ भी नहीं, सब कुछ प्रभु है।” भक्त का अस्तित्व तब समाप्त नहीं होता, बल्कि प्रभु में विलीन होकर पूर्ण हो जाता है। सुमिरन कोई

कर्मकांड नहीं, यह जीवन का सत्य है। सुमिरन से दुःख मिटते हैं; क्योंकि यह मनुष्य को अहंकार से मुक्त करता है। सुमिरन से सुख मिलता है, क्योंकि यह आत्मा को परमप्रभु से जोड़ देता है। संत कबीर कहते हैं-

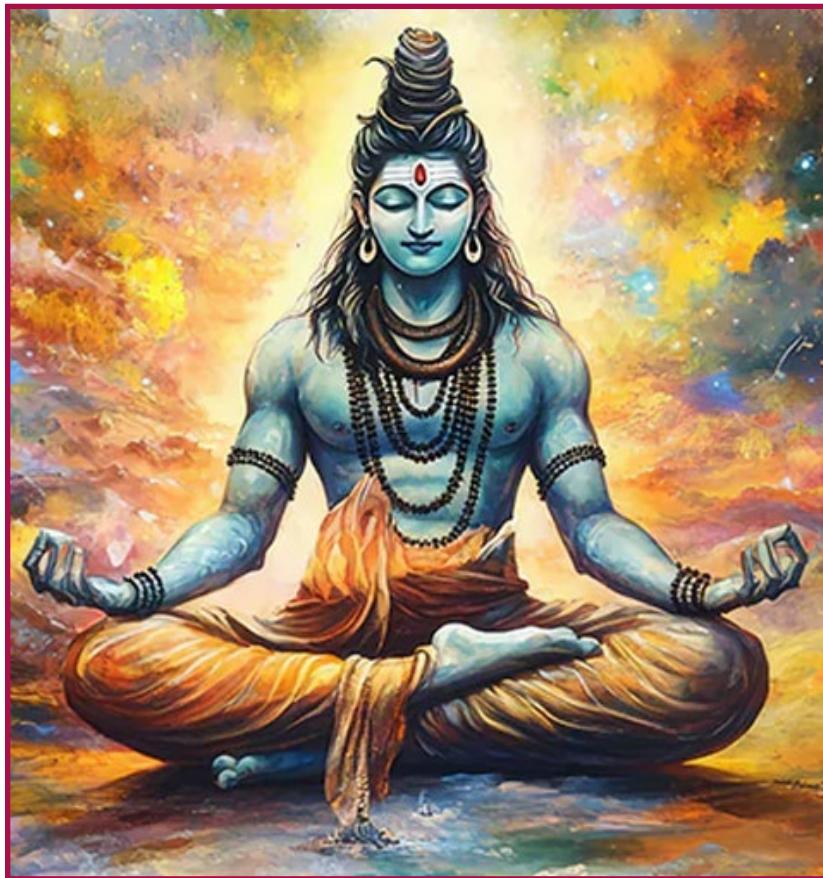
**सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुःख जाय।
कहे कबीर सुमिरन किए, साई माहिं समाय॥**

जो यह जान लेता है, वही सच्चा भक्त है, और वही अमरतत्व का अधिकारी बनता है। इसीलिए रामचरितमानस में कहा गया है-

वेद पुरान संत मत एहू।

सकल सुकृत फल नाम सनेहू॥

इसलिए सभी ओर से मन को मोड़कर प्रभु नाम सुमिरण में लगाओ, यही मानव जीवन का सार है। ■



पुराने जमाने में ईरान में स्त्री-पुरुष भेड़-बकरियों की तरह बिका करते थे। उनको कैदी की तरह रखा जाता था और पशुओं की भाँति काम लिया जाता था। एक गरीब मुसलमान की रबिया नाम की कन्या को जिसके मां-बाप मर चुके थे, जोकि भगवान की सच्ची भक्त थी, कोई बदमाश आदमी नौकरी का लालच

देकर बहकाकर ले गया और किसी अमीर आदमी के यहां बेच दिया। अमीर आदमी रबिया से मनमाने काम लेता था, पर गुलाम होने के कारण उसे सब कष्ट सहन करने पड़ते थे। वह चाहती थी कि आजाद होकर भगवान का भजन करूँ, लेकिन वह वहां से जा भी नहीं सकती थी; क्योंकि भागने पर गुलाम को मौत की सजा दी जाती थी। इन बातों को जानते हुए भी रबिया एक रात अमीर के यहां से भाग निकली, लेकिन अंधेरे में एक गड्ढे में गिर गई और उसका हाथ टूट गया, तब उसने सोचा कि अभी मेरे मालिक की ऐसी इच्छा नहीं है। इसलिए वह वापस लौट आई और अमीर से कहा कि मैं तो यहां से भाग गई थी, लेकिन रास्ते में मेरा हाथ टूट गया। ऐसा मालूम होता है कि अभी मेरे मालिक का ऐसा हुक्म नहीं। सच बोलने से अमीर ने रबिया को माफ कर दिया और वह फिर अमीर की सेवा में लग गई।

रबिया अब पहले से भी अधिक प्रेम से काम करती और जब अमीर के कामों से छुट्टी पाती तो अपनी कोठरी में बैठकर भगवान का ध्यान-सुमिरण करती। एक दिन अमीर रात्रि में किसी काम से अपने कमरे से बाहर निकला तो उसने देखा कि रबिया की कोठरी के अन्दर खूब प्रकाश फैला हुआ है। अमीर ने रबिया की कोठरी के अन्दर झांक कर देखा; तो अवाक रह गया। रबिया आसन पर बैठी हुई थी और रोशनी उसके शरीर से निकल रही थी जिससे सारी कोठरी रोशन थी, रबिया के उठने पर अमीर उसके चरणों में गिर गया और उससे कहा कि मैंने यह नहीं समझा कि आप इतनी बड़ी भगवान की भक्त हैं। मैंने तुमसे सेवा भी ली और तुम्हारे साथ

सब अनुचित व्यवहार भी किए। अब मैं अपने सब गुनाहों की माफी मांगता हूँ, आगे से तुम्हारी हर प्रकार की सेवा करने को तैयार हूँ। तुम्हारी सेवा करके मैं अपने पापों का प्रायश्चित्त करूँगा, तभी इस ऋण से मुक्त होऊँगा। रबिया ने कहा- इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है, मेरे मालिक को ऐसा ही मंजूर था। मैं तुमसे किसी प्रकार की सेवा नहीं चाहती। यदि आप मुझसे प्रसन्न हों, तो मुझे आजाद कर दें; ताकि मैं अलग रहकर भगवान का भजन कर सकूँ। अमीर ने रबिया को आजाद कर दिया, वह शहर के बाहर झोपड़ी में रहकर भगवान का भजन करने लगी। हम भी भगवान का भजने करेंगे, तो हमारे भी सारे दुःख दूर हो जायेंगे। जो एकमेव परमेश्वर के आश्रित रहता है, वह एक न एक दिन परमेश्वर की कृपा से समस्त कष्ट और क्लेशों से मुक्त हो ही जाता है। ■

परमभक्ता रबिया

जो घट अंतर हरि सुमिरै

जो घट अंतर हरि सुमिरै।

ताकौ काल रूठि का करिहै, जो चित चरन धरै॥

जो घट अंतर हरि सुमिरै॥ टेक॥

कोपै तात प्रहलाद भगत कौं, नामहि लेत जरै।

खंभ फारि नरसिंह प्रगट है, असुर के प्रान हरै॥

जो घट अंतर हरि सुमिरै॥ 1॥

सहस बरस गज युद्ध करत भए, छिन इक ध्यान धरै।

चक्र धरैं बैकुँठ तैं धाए, वाकी पैज सरै॥

जो घट अंतर हरि सुमिरै॥ 2॥

अजामील द्विज सौ अपराधी, अंतकाल बिडरै।

सुत-सुमिरत नारायण बानी, पार्षद धाइ परै॥

जो घट अंतर हरि सुमिरै॥ 3॥

जहँ-जहँ दुसह कष्ट भक्तनि कौं, तहँ-तहँ सार करै।

सूरदास स्याम सेए तैं दुस्तर पार तरै॥

जो घट अंतर हरि सुमिरै॥ 4॥

प्रेम, भक्ति और श्रद्धा के साथ मनायी गयी

125 वीं श्री हंस जयंती

ऋषिकुल विद्यापीठ मैदान, हरिद्वार। पतित पावनी गंगा तट पर बसा हरिद्वार एक दिव्य तीर्थ है, जो हर और हरि के द्वार तक ले जाने का मार्ग प्रशस्त करता है। यही वह स्थान है, जहां माता मायादेवी का दिव्य मंदिर है; जिनके नाम पर प्राचीनकाल में हरिद्वार को मायापुर कहा

अपने आपको धन्य मानते हैं। यही वह परमपवित्र स्थान है, जहां हरएक 12 वर्ष के बाद महाकुंभ और हरएक छह वर्ष पर अर्द्धकुंभ मेला का भव्य आयोजन किया जाता है; जिसमें देश-विदेश से हजारों मंडलेश्वर-महामंडलेश्वर, साधु-संत, गुरु-आचार्य, सिद्ध-साधक, योगी-हठयोगी,

आरती और भजन-कीर्तन की मधुर ध्वनि से सम्पूर्ण वातावरण तरंगित हो उठता है। हरिद्वार एक ऐसा दिव्य धाम है, जहां की रजकण, वायु और वातावरण मनुष्यों के भीतर दिव्यता का अनुभव कराता है। हिमालय की तलहटी में बसे हरिद्वार में सभी साधु-संत और साधक वास करना



125वीं श्री हंस जयंती के सुअवसर पर श्री हंस दर्शन दीर्घा का लोकार्पण करने के बाद दर्शन दीर्घा का अवलोकन करते हुए परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

जाता था। यही वह स्थान है, जहाँ पहाड़ के उच्च शिखर पर माता चण्डीदेवी एवं माता मन्सादेवी भव्य मंदिर में विराजमान हैं। यही वह स्थान है, जहाँ कनखल में दक्ष प्रजापति के घर माता सती ने अवतार लेकर भगवान शिव का वरण किया। यही वह स्थान है, जहाँ शिव के अपमान पर माता सती ने अपने आपको योगाग्नि में स्वाहा कर लिया। यही वह स्थान है, जहाँ हर की पौड़ी में मां गंगा के मध्य ब्रह्मकुण्ड अवस्थित है, जिसमें स्नान कर तीर्थयात्री

तपस्वी-मनस्वी, विद्वान और लाखों-लाख श्रद्धालु व आत्म-मुमुक्षु श्रद्धाभाव के साथ पथारकर अपने जीवन को सफल बनाते हैं। यही वह स्थान है, जहां योग, आयुर्वेद, पंचकर्म, प्राकृतिक चिकित्सा और औषधालयों की भरमार है। यही वह स्थान है, जहां ब्रह्ममुहूर्त से ही साधक गंगा स्नान कर गंगातट पर साधनारत हो जाते हैं। यही वह स्थान है, जहां प्रातःकाल से ही मंदिरों और आश्रमों से शंख एवं घंटियों की दिव्य ध्वनि के साथ

चाहते हैं।

इसी परमपवित्र दिव्य तीर्थ स्थान को योगिराज श्री हंस जी महाराज ने अपनी कर्मस्थली बनाया। यहीं रहकर उन्होंने अध्यात्म ज्ञान प्रचार का अभियान आरंभ किया। इसी पवित्र नगरी में पहला आश्रम स्थापित किया और यहीं से उन्होंने अध्यात्म ज्ञान प्रचार को संगठित रूप प्रदान किया। होली, वैशाखी और गुरुपूजा आदि महापर्वों के सुअवसर पर विशाल सत्संग समारोहों का आयोजन

आरंभ किया। इन समारोहों में हजारों-हजार प्रेमीभक्त सम्मिलित होकर सद्गुरु महाराज के दर्शन एवं प्रवचन से आत्मलाभ प्राप्त करते थे। यहाँ स्थापित आश्रम ही प्रेमीभक्तों एवं जिज्ञासुओं के लिए उनके संपर्क, परिचय एवं पते का एकमात्र पहला स्थाई माध्यम बना। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं

के आदेशानुसार अध्यात्म ज्ञान प्रचार में संलग्न हो गये। स्वामी श्री स्वरूपानंद जी महाराज ने 26 वर्ष की आयु में उन्हें जिज्ञासुओं को आत्मज्ञान का उपदेश देने की अज्ञा प्रदान की। योगिराज श्री हंस जी महाराज ने श्री सद्गुरु महाराज के आदेश से सर्वग्रन्थ सार संग्रहित कर एक ग्रन्थ का प्रणयन किया जिसका

अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार दिन दूनी, रात चौगुनी गति से बढ़ने लगा। इसीलिए प्रेमीभक्तों की प्रार्थना पर श्री महाराज जी ने हरिद्वार में एक आश्रम की स्थापना की जो उनका प्रथम आश्रम, पता और संपर्क स्थान बना। इसी आश्रम के माध्यम से उन्होंने विभिन्न पर्व-त्योहारों को संगठित रूप से प्रेमीभक्तों के बीच मनाना आरंभ



125वीं श्री हंस जयंती के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह को सम्बोधित करते हुए परमाराध्या माताश्री मंगला जी तथा साथ में मंच पर विराजमान परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

माताश्री मंगला जी ने इसी परमपवित्र स्थान पर प्रतिवर्ष श्री हंस जयंती मनाने का निश्चय किया ताकि उनकी शिक्षाओं, कार्यों एवं स्मृतियों की पुनरावृत्ति की जा सके।

योगिराज श्री हंस जी महाराज का आविर्भाव सन् 1900 को गाड़ की सेडिया जिला पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड में हुआ। उन्होंने 22 वर्ष की आयु में स्वामी श्री स्वरूपानंद जी महाराज का शिष्यत्व ग्रहण कर आत्म-साक्षात्कार किया। तब से ही वे सद्गुरु महाराज

नाम स्वामी श्री स्वरूपानंद जी महाराज ने “हंस योग प्रकाश” रखा। इस प्रकार श्री सद्गुरु महाराज के आदेशानुसार श्री हंस जी महाराज ने अविभाजित भारत के सिन्ध, बलूचिस्तान, फ़ॉन्टियर प्रान्त एवं पंजाब प्रान्त में अध्यात्म ज्ञान का सघन प्रचार-प्रसार किया। सन् 1947 में भारत के विभाजन के पश्चात उन्होंने दिल्ली, मुम्बई, बंगलौर, अहमदाबाद, पटना, जयपुर, उदयपुर, भोपाल, इन्दौर, पुणे, नागपुर, कोलकाता आदि स्थानों में घूम-घूमकर प्रचार-प्रसार किया। इस तरह

किया। होली, बैशाखी, गुरुपूजा आदि महोत्सव बड़े ही उत्साह के साथ मनाये जाने लगे। इस प्रकार संपूर्ण भारत में अध्यात्म ज्ञान प्रचार की धूम मच गयी। अनेकानेक श्रद्धालु भक्त श्री महाराज जी की शरण में आ गये जिन्हें उन्होंने अध्यात्म ज्ञान प्रचार में ही लगा दिया। कई समर्पित शिष्य/शिष्याओं ने श्री महाराज जी की शरण में संन्यास ग्रहण कर अपने आपको पूर्णतः अध्यात्म ज्ञान प्रचार में समर्पित कर दिया। इस प्रकार सतनाम और हंसनाम की गूंज संपूर्ण

भारत में गुंजायमान हो उठी।

इसी हंसनाम के ध्वज को परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी अपने शिष्यों, अनुयायियों एवं महात्मा/बाईंगण को साथ लेकर निरंतर अग्रसर हैं। इसी श्रृंखला में योगिराज श्री हंस जी महाराज की 125वीं जयंती वृहत स्तर पर मनाई गयी। इस सुअवसर पर

गया। इस दर्शन दीर्घा का 7 नवम्बर को शुभोद्घाटन परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर समस्त दिव्य विभूतियां महात्मा/बाईंगण, कार्यकर्ताओं एवं प्रेमीभक्तों के साथ उपस्थित रहे। पहले समस्त दिव्य विभूतियों ने दर्शन दीर्घा का अवलोकन

सेवक संगठन के मुख्य प्रभारी श्री सुरेश वर्मा, सहयोगी अरुण यादव, जी.एस. कुशवाहा, महिला विंग की प्रभारी सुश्री सोनी पंवार, सहयोगी सुश्री सपना सिंह आदि ने सम्बोधित कर सेवक/सेविकाओं का मार्गदर्शन किया।

संपूर्ण भारत से 7 नवम्बर से ही प्रेमीभक्तों के समूह समारोह में भाग लेने



125वीं श्री हंस जयंती के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में प्रवचन श्रवण करते हुए विशाल जनसमुदाय

हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्वरल सेंटर, नई दिल्ली के तत्वावधान में 8 व 9 नवम्बर, 2025 को ऋषिकुल विद्यापीठ मैदान, हरिद्वार में द्विदिवसीय विशाल जनकल्याण समारोह आयोजित किया गया जिसमें देश-विदेश के महात्मा/बाईंगण, प्रचारक, सहयोगी प्रचारक, प्रेमीभक्त, श्रद्धालु एवं जिज्ञासुगण ने पन्द्रह हजार से अधिक संख्या में श्रद्धाभक्ति के साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस सुअवसर पर श्री हंस जी महाराज का पुनीत स्मरण करने हेतु “श्री हंस दर्शन दीर्घा” बनाई गई जिसमें उनकी विभिन्न दिव्य छवियों को प्रदर्शित किया

किया; तत्पश्चात महात्मा/बाईंगण, कार्यकर्ताओं ने अवलोकन कर अपार आनंद प्राप्त किया। इसके बाद श्री हंस दर्शन दीर्घा प्रेमीभक्तों के लिए खोल दी गयी। प्रेमीभक्त श्री हंस जी महाराज के साधनाकाल से अध्यात्म ज्ञान प्रचार काल की विभिन्न दिव्य छवियों को निहार कर अपने आपको धन्य मान रहे थे। सायंकाल श्री हंसलोक सेवकों की मार्गदर्शन बैठक आयोजित की गयी जिसमें श्री हंसलोक सेवक, सेविकाएं एवं जूनियर सेवकों ने भाग लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस मार्गदर्शन शिविर को प्रबंधक श्री मानस स्वार्ड, राकेश सिंह,

के लिए ऋषिकुल मैदान पहुँचने लगे थे। ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता गया प्रेमीभक्तों की संख्या बढ़ती गयी और सायंकाल तक संपूर्ण मैदान में प्रेमीभक्तों की चहल-पहल दृष्टिगोचर होने लगी। इन सभी आगंतुकों के लिए समस्त सुविधाओं की व्यवस्था की गयी थी। हरिद्वार के सभी प्रमुख आश्रम, धर्मशालाएं और होटलों में आवास के साथ मैदान में भी कई वाटरप्रूफ टेंट लगाकर आवास की व्यवस्था की गयी थी। इसके अलावा विशाल भण्डारा, भोजनालय, पंडाल हाल, बिजली, पानी, शौचालय, स्नानघर, पेयजल, स्वच्छता, चाय, वाहन

आदि व्यवस्था की गयी थी। सुरक्षा के लिए आहरित महिला-पुरुष गार्ड्स के अलावा संस्था के स्वयंसेवक/सेविकाओं को तैनात किया गया था। साथ ही सभी टेंटों, पंडाल, रास्तों आदि स्थानों पर पर्याप्त संख्या में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे। बुक स्टॉल के साथ सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष, सूचना एवं खोया-पाया केन्द्र, वाहन एवं यातायात, पुलिस बूथ, स्वागत कक्ष, सुरक्षा चौकियां, श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं का शिविर कार्यालय, मार्गदर्शक पट्टिकाएं एवं

भजन-संगीत वातावरण को मधुरतम बना रहा था। समस्त प्रांगण में चहल-पहल थी। प्रेमीभक्त परस्पर एक-दूसरे से मिलकर तथा महात्मा/बाईंगण से मिलकर अत्यन्त हर्षित हो रहे थे।

इस कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार सोशल मीडिया, समाचार पत्रों, बल्क एसएमएस, काल-ट्यूनिंग के साथ हरिद्वार, ऋषिकेश, रुड़की तथा देहरादून क्षेत्र में सैकड़ों विशाल होर्डिंग लगाकर किया गया।

योगिराज श्री हंस जी महाराज की 8

के प्रेमी भक्तों ने मधुर संगीत के साथ भजन गायन आरंभ किया। सर्वप्रथम श्री भूपेन्द्र धीमान ने “चरणारविन्द गोविन्द नमामि, गुरुदेव शरणं गुरुदेवं नमामि” सद्गुरु स्तुति गाई। फिर श्री मंगल जी ने अपने सत्संग विचार रखे। तत्पश्चात महात्मा श्री शिवकृपानंद जी का सत्संग हुआ। इन दोनों ने योगिराज श्री हंस जी महाराज की साधना, संघर्ष और ज्ञान प्रचार के लिए सहीं कठिनाइयों के बारे में विस्तार से समझाया। एक भजन “कामिल काम कमाल किया, तूने



125वीं श्री हंस जयंती के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में
भक्तिभाव से परिपूर्ण भजनों की प्रस्तुति करते हुए श्री सूरज सनवाल, सहयोगी गायक एवं संगीतकार

विशेषज्ञ चिकित्सकों के साथ निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया। आपातकाल में 24 घंटे चिकित्सा सुविधा एवं एम्बूलेंस की व्यवस्था के साथ स्वामी रामप्रकाश चिकित्साल के साथ समन्वय किया गया ताकि विशेष परिस्थिति में रोगियों को भर्ती कर उनकी उचित चिकित्सा की जा सके। ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से प्रेमीभक्तों का निरंतर मार्गदर्शन करने के साथ-साथ विभिन्न सूचनाओं, समाचारों और निर्देशों को प्रसारित किया जा रहा था। इसके अलावा ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से भक्तिभाव से परिपूर्ण

नवम्बर को 125 वीं जयंती थी। इसलिए सभी भक्तों के हृदय में उनका पुण्य स्मरण, उनकी महानता और दिव्यता का स्मरण करते हुए मन-मस्तक उनके श्रीचरणों में नतमस्तक था। कलिकाल की विषम परिस्थिति में एक ऐसी महान विभूति का प्रादुर्भाव हुआ जिसने अपने ज्ञानालोक से संपर्क में आए जिज्ञासुओं को अध्यात्म ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराकर उनके जीवन को प्रकाशमय बना दिया। संपूर्ण परिसर भर चुका था। सायंकाल निश्चित समय पर जनकल्याण समारोह का शुभारंभ हुआ। श्री सद्गुरु दरबार

‘ख्याल से खेल बनाय दिया’ सत्यवान जी ने गया। सुश्री रश्मि ने “अपनी हस्ती जो तेरे चरणों में मिटा देते हैं” गाया। तत्पश्चात् परमपूज्य श्री भोले जी महाराज ने अपनी दिव्य वाणी में “सुनो सुनो बचन नर नारी, हरि भजन करो सुखकारी” तथा “गुरु चरण कमल बलिहारी रे” भजन गाये। इन भजनों में प्रेमीभक्तों ने पूरी तन्मयता से सहभागिता निभाई।

दिव्य विभूतियों के सानिध्य में बैठे श्रोतागण शांति और आनंद का अनुभव कर रहे थे। संपूर्ण पंडाल में शांतिमय

प्रेम-भक्तियुक्त वातावरण बना हुआ था। योगिराज श्री हंस जी महाराज ने सर्व धर्मग्रंथों से सार संग्रह कर जो अमूल्य पुस्तक “हंस योग प्रकाश” नाम से प्रकाशित की गयी थी, उसके प्रथम मूल अंक को स्कैन कर उसके मूल स्वरूप में ही एक ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया गया था, जिसका विमोचन परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी ने किया। यह अमूल्य ग्रंथ संस्था के बुक

श्री महाराज जी के समय हम तो नहीं थे, किन्तु जगतजननी माताश्री राजेश्वरी देवी जी हमेशा उनकी लीलाएं सुनाते रहते थे। उन्हीं के माध्यम से हमें पता चला कि कैसे श्री हंस जी महाराज ने भौतिक संसाधनों के अभाव में अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने पैदल चलकर, बैलगाड़ी में बैठकर, साइकिल चलाकर, घोड़ा तांगा से गांव-गांव जाकर अध्यात्म ज्ञान की अलख जगाई। उन्होंने अविभाजित भारत

संदेश परिषद्” नाम की संस्था स्थापित की तथा उसके तत्वावधान में बड़े-बड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया जाने लगा; इन कार्यक्रमों को व्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिए प्रेमीभक्तों के बीच ही “हंस वालिन्टियर कोर” का भी गठन किया। इस तरह प्रचार का संगठित रूप सबके सामने आने लगा और देशभर के लोग श्री हंस जी महाराज को पहचानने लगे। श्री हंस जी महाराज ने देश



125वीं श्री हंस जयंती के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में सम्मिलित प्रेमी-भक्तगण भण्डारे में भोजन-प्रसाद ग्रहण करते हुए

स्टॉल पर उपलब्ध है। जिन प्रेमीभक्तों को ज्ञानोपदेश है, उनके लिए यह ग्रंथ उनकी साधना में मार्गदर्शक की भूमिका निभायेगा। इसलिए सभी प्रेमीभक्तों को यह ग्रंथ अपने पास रखना ही चाहिए और इसका बार-बार अध्ययन व मनन करना चाहिए। तत्पश्चात परमाराध्या माताश्री मंगला जी का मंगलमय प्रवचन आरंभ हुआ। श्री माता जी ने योगिराज श्री हंस जी महाराज का पुण्य स्मरण करते हुए उनको नमन किया। उन्होंने बताया कि

के पंजाब, सिंध, फ्रंटियर प्रान्त के साथ संपूर्ण भारत में अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार शुरू किया। धीरे-धीरे विभिन्न क्षेत्रों के गांव, कस्बों एवं नगरों में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित हुई। इस प्रकार जब प्रचार बढ़ने लगा तो प्रेमीभक्तों की प्रार्थना पर हरिद्वार में एक आश्रम स्थापित किया गया जो उनका प्रथम संपर्क, परिचय और स्थाई पता बना। माताश्री मंगला जी ने बताया कि श्री महाराज जी ने प्रेमीभक्तों को संगठित करने के उद्देश्य से “दिव्य

की आजादी में भी भाग लिया और उस दौर में नेताजी सुभाष चंद्र बोस, पंडित जवाहर लाल नेहरू, डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राजा महेन्द्र प्रताप सिंह आदि महानुभावों से संपर्क कर अध्यात्म के महत्व को समझाया। कई महानुभावों ने श्री महाराज जी से अध्यात्म ज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त किया। देश के प्रमुख समाचार पत्रों में भी श्री हंस जी महाराज के कार्यक्रमों को स्थान मिलने लगा। उनके सामने कई प्रकार के विरोध-

अवरोध भी आए किन्तु उन्होंने अपने ज्ञान बल से सबको पार किया। इस तरह संपूर्ण भारत में श्री हंस जी महाराज की जय-जयकार होने लगी। लगातार माताश्री मंगला जी ने अनेक संस्मरण प्रेमीभक्तों के समक्ष रखे।

इसके बाद श्री संतोष के द्वारा एक भजन ‘गुरु पैयां लागूं नाम लखाय

प्रथम दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

अगले दिन प्रातःकाल से देश के विभिन्न कोनों से आए आत्म-पिपासुओं को महात्मा/बाईगण ने “आत्मज्ञान” का व्यावहारिक बोध कराया। तत्पश्चात परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी के दिव्य दर्शनों का प्रेमीभक्तों को सौभाग्य प्राप्त हुआ। दर्शनों

के जीवन दर्शन से संबंधित एक वीडियो डोक्यूमेंट्री तथा द हंस फाउण्डेशन के सेवा कार्यों से संबंधित डोक्यूमेंट्री दिखाई गयी। तत्पश्चात सुश्री श्रेता दीदी का सारगर्भित प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने योगिराज श्री हंस जी महाराज का स्मरण करते हुए उन्हें सादर नमन किया और उनके प्रेरक संस्मरण प्रेमी भक्तों के समझ रखे। सुश्री



125वीं श्री हंस जयंती के सुअवसर पर आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर में चिकित्सकीय परामर्श प्राप्त करते हुए जरूरतमंद

दीज्यो रे तथा श्री सत्यवान जी ने श्री हंस जी महाराज के समय का प्रिय भजन “हो गये दर्शन तुम्हारे गुरुजी, खुल गये भाग्य हमारे गुरु जी” गाया। समारोह में पथारे प्रेमीभक्तों के लिए तीनों समय सुबह, दोपहर और रात्रि को भोजन प्रसाद की अनवरत व्यवस्था रही। तीनों समय बदल-बदल कर स्वादिष्ट भोजन प्रसाद तैयार किया गया जिसका सभी ने पूर्ण रुचि के साथ रसास्वादन किया। इसप्रकार

के समय सभी को बेसन लड्डू का प्रसाद वितरित किया गया। सायंकाल ठीक समय पर द्वितीय दिवस का कार्यक्रम “गुरु की मूरत मन में ध्याना, गुरु के शब्द मंत्र मन माना” वंदना के साथ शुरू हुआ, जिसे सुश्री रशि ने अपनी मधुर ध्वनि में गाया। तत्पश्चात श्री सूरज सनवाल ने दो भजन “गुरु सम दाता जग में कोई नहीं, सब जग मांगन हारा” तथा “तू दीन दयाल हों” गाये। इसके बाद श्री हंस जी महाराज

श्रेता दीदी ने समझाया कि मनुष्य का जीवन क्षणिक है। इसमें ऐसा कुछ नहीं जिस पर अहंकार किया जा सके। इसके बाद सूरज सनवाल ने “अचरज देखा भारी साधो, अचरज देखा भारी रे” भजन गाया। तत्पश्चात माताश्री मंगला जी का ओजस्वी प्रचवन हुआ जिसमें उन्होंने अध्यात्म ज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अध्यात्म ज्ञान ही वह माध्यम है जो जीवन का पूर्णतः रूपांतरण

कर सकता है। आज मानव समाज में जो विसंगतियां आई हुई हैं, इसका मुख्य कारण अज्ञान है। यदि मनुष्य को ज्ञात हो जाये कि अज्ञानांधकार के कारण ही उसके जीवन में दैहिक, भौतिक और आध्यात्मिक दुःख हैं और उनसे छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय ज्ञान ही है; तो

निभाया।

विशाल जनकल्याण समारोह की समस्त गतिविधियां सुचारू रूप से चल रही थीं। भंडारा, चिकित्सा शिविर, सुरक्षा व्यवस्था, सूचना केन्द्र, वाहन एवं आवास आदि व्यवस्था के कार्य भलीभांति संचालित किए जा रहे थे। सभी

श्री हंस जी महाराज के बारे में विस्तार से जानने व समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ। नये व पुराने प्रेमीभक्त श्री महाराज जी के अनेक दिव्य संस्मरणों और उनकी दिव्य छवि को अपने हृदय में स्थापित कर अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान कर गये। इस तरह यह कार्यक्रम हर प्रकार



125वीं श्री हंस जयंती के सुअवसर पर आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर में दवाइयां प्राप्त करते हुए जरूरतमंद

वे ज्ञान के प्रति आकर्षित होंगे और ज्ञान को जीवन में आत्मसात कर अपने जीवन को हारप्रकार से पवित्र और आनंदित कर पाएंगे। श्री माता जी के प्रवचन के बाद श्री भूपेन्द्र जी द्वारा “शरणागत पाल कृपाल हरि हमको एक आस तुम्हारी है” तथा सत्यवान जी द्वारा “बरसन लाग्यो रंग, शबद इङ्ग लाग्यो री” गया गया। इनके साथ कोरस में कुमारी काव्या वर्मा, मोनिका दुबे, गरिमा सनवाल, कसिस कुमारी एवं नैना कुमारी ने दोनों दिन साथ

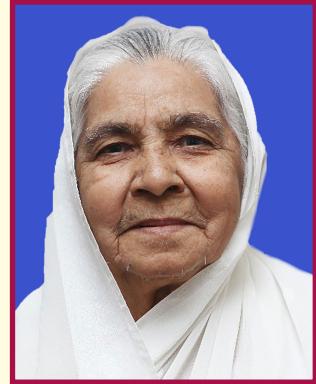
कार्यकर्ताओं, सेवकों तथा सेविकाओं का यही प्रयास था कि कहीं किसी आगंतुक को किसी प्रकार की असुविधा न हो। आरती के पश्चात कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस तरह योगिराज श्री हंस जी महाराज के जीवन दर्शन के विषय में जानकर सुनकर सभी को बहुत ही आनंद आया और श्री महाराज जी के प्रति उनकी श्रद्धा और भी अधिक बढ़ गयी। यह एक अद्वितीय समारोह था जिसमें सभी को

से व्यवस्थित, अनुशासित और स्मरणीय रहा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय पुलिस, प्रशासन, नगरनिगम, ऋषिकुल विद्यापीठ के साथ संस्था महात्मा/बाईंगण, प्रचारकों, सहयोगी प्रचारकों, कार्यकर्ताओं, आश्रम सेवकों तथा श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं तथा जूनियर सेवकों का सराहनीय योगदान रहा। हम हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर की ओर से सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। ■

-: श्रद्धांजलि :-

बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि गुरु दरवार की पुरानी सेविका माता केशरी देवी धर्मपत्नी श्री रामजी लाल निवासी पहाड़ी धीरज, दिल्ली का 94 वर्ष की आयु में 4 नवम्बर, 2025 को देहावसान हो गया। केशरी माता के निधन पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी सहित समस्त दिव्य परिवार ने गहरा दुःख व्यक्त किया। स्वर्गीय केशरी माता किशोरावस्था से ही योगिराज श्री हंस जी महाराज के सत्संग व दर्शन के लिए जाने लगी थीं। श्री महाराज जी से ज्ञानोपदेश के पश्चात उनकी भक्ति, भजन और सेवा के प्रति लगन दिन-प्रतिदिन बढ़ती गयी। युवावस्था में ही पति के देहांत के बाद वे अपना घर-परिवार छोड़कर संपूर्ण रूप से जगत जननी माता श्री राजेश्वरी देवी की शरण में आ गयीं और दिन-रात दिव्य विभूतियों की सेवा में संलग्न हो गयीं। उन्होंने संपूर्ण दिव्य परिवार की बड़ी लगन, प्रेम और श्रद्धाभाव से सेवा की; किंतु परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के प्रति उनका अद्वितीय लगाव था। इसलिए वे उनकी सेवा के साथ-साथ उनके सुपुत्र और पुत्रियों की सेवा में भी जीवन-पर्यन्त समर्पित रहीं। स्वर्गीय केशरी माता का जीवन सेवा का एक अनुपम उदाहरण है, जो सभी प्रेमीभक्तों एवं सेवकों के लिए अनुकरणीय है। सभी आश्रमवासी व भक्तगण उन्हें “केशरी माँ” के नाम से बुलाते थे। वे आश्रम में आने वाले प्रेमी भक्तों का ध्यान रखती थीं, उनसे मिलकर खुश होती थीं और हमेशा उनकी कुशलक्षेम पूछती रहती थीं। जीवन के अंतिम पड़ाव में भी वे दिव्य विभूतियों की लीलाएं सुनने और सुनाने में आनंद मनाती थीं। उनके जीवन में श्री सद्गुरु महाराज के ध्यान, भजन, भक्ति और सेवा के अलावा अन्य किसी के लिए कोई स्थान नहीं था। केशरी माता की सेवाएं सदैव स्मरणीय रहेंगी तथा हम सब भक्तों के लिए प्रेरणा प्रदान करती रहेंगी। हम सभी संस्था के सदस्य परमपिता परमात्मा और श्री सद्गुरुदेव महाराज जी से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।



श्रद्धावनन् - हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

सभी आदरणीय महात्मा/बाईंगण एवं प्रचारकों से निवेदन है कि अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आप अपने क्षेत्र में “हंसलोक संदेश” पत्रिका को अधिक से अधिक प्रेमी-भक्तों एवं अध्यात्मज्ञान पिपासुओं तक पहुँचायें। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के देशभर में आयोजित जनकल्याण समारोहों में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही समारोहों के सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं जनकल्याण से संबंधित गतिविधियों की भी सूचना व समाचार मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए।

डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी-भक्त के नाम व पते पर पत्रिकाएं बंडल रूप में मंगवा सकते हैं।

नोट:- (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय पाठक का पेन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर रसीद पर अवश्य लिखें।

(2) पत्रिका की एक रसीद (पर्ची) 100/- रुपये से अधिक की न काटी जाए।

(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पेन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(4) यदि आप एक से अधिक पत्रिकाएं बंडल के रूप में मंगाना चाहते हैं तो मो.नं-9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

एक प्रति मूल्य- रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-

कार्यालय - हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर,

नई दिल्ली-110074 संपर्क सूत्र- 8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत करते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करें। -सम्पादक

दिसम्बर, 2025 के पर्व-त्योहार

- | | |
|---|----------|
| □ 1 दिसम्बर सोमवार-मोक्षदा | एकादशी |
| □ 4 दिसम्बर गुरुवार-मार्गशीष | पूर्णिमा |
| □ 7 दिसम्बर रविवार-संकष्टी | चतुर्थी |
| □ 15 दिसम्बर सोमवार-सफला | एकादशी |
| □ 25 दिसम्बर गुरुवार-क्रिसमस | क्रिसमस |
| □ 27 दिसम्बर शनिवार-गुरु गोविन्द सिंह जयंती | |
| □ 30 दिसम्बर मंगलवार-पुत्रदा एकादशी | |



125वीं हंस जयंती समारोह - 8 व 9 नवंबर, 2025, हरिद्वार, उत्तराखण्ड



हरिद्वार, उत्तराखण्ड। परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज की 125 वीं जयंती श्रद्धा व भक्ति के साथ 8 व 9 नवंबर, 2025 को ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार में विशाल जनकल्याण समारोह के रूप में मनायी गयी। इस अवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज, माता श्री मंगला जी व सुश्री श्रेता रावत जी एवं महात्मा/बाईंगण ने समारोह को संबोधित किया। सुश्री श्रेता रावत जी ने कहा कि भारत में हजारों संत, ऋषि-मुनि हुए हैं, जिन्होंने इस आत्मज्ञान का प्रचार किया, उसी कड़ी में श्री हंस जी महाराज का भी नाम है। उन्होंने श्री महाराज जी की आध्यात्मिक जीवन यात्रा में आए संघर्षों के बारे में विस्तार से बताया तथा युवाओं को आत्मज्ञान प्रचार में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। सुश्री श्रेता जी ने बताया आत्मज्ञान विरासत के रूप में श्री हंस जी महाराज से प्राप्त हुआ जिसने हमारे जीवन को सम्पूर्ण रूप से बदल दिया है। अध्यात्म ने हमें एक सकारात्मक नजरिया दिया है। सनातन आध्यात्मिक धारा को समय-समय पर संत-महात्माओं के द्वारा आगे बढ़ाया जाता है। अतः हम सभी प्रेमीभक्तों को इस आत्मज्ञान रूपी विरासत को आने वाले पीढ़ी के लिए आगे बढ़ाने में सहयोग देना चाहिए एवं सेवा के द्वारा अपने संस्कारों को सुरक्षित रखना चाहिए। यह 125 वीं जयंती वर्षभर देश-विदेश में जगह-जगह मनायी जाएगी। इस आध्यात्मिक आंदोलन में हम सभी सहभागी होने का सौभाग्य प्राप्त करें।



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788



HANSLOKASHRAM



/hanslok